Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७।५

ओ३म्

मेरी विदेश यात्रा



रामपाल शास्त्री

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक :
आर्य विद्यार्थी सभा
श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय,
119, गोतमनगर, नई दिल्ली-49

प्रथम संस्करण 1000
मूल्य : 10 रुपये

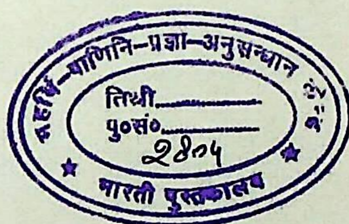
मुद्रक :
वेदव्रत शास्त्री
आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
गोहाना मार्ग, रोहतक। फोन 72874

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

मेरी विदेश यात्रा

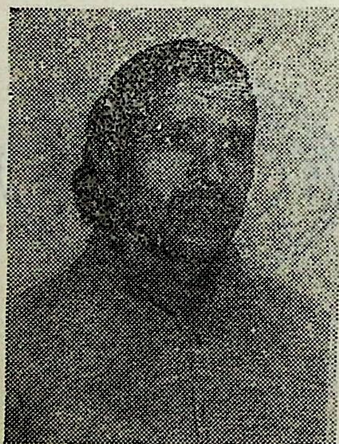


रामपाल शास्त्री

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक का संक्षिप्त परिचय



जन्म—12 जून, 1960, ग्राम ईसमाईला रोहतक, हरयाणा (भारत)।

माता-पिता—श्रीमती दिलभरी, श्री रामपत आर्य।

शिक्षा—गुरुकुल झज्जर, श्रीमद्दया-नन्द वेद विद्यालय गौतम नगर, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी, श्री लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली से शास्त्री, आचार्य, शिक्षा शास्त्री एवं योग प्रशिक्षण की उपाधियां प्राप्त की हुई हैं।

कार्य एवं कार्यक्षेत्र—सार्वदेशिक आर्य वीर दल के माध्यम से देश-विदेश में योग एवं व्यायाम के शिविरों में प्राणायाम और व्यायाम के शारीरिक प्रदर्शनों द्वारा योग आदि का प्रशिक्षण देना। गुरुकुल और आर्यसमाज की ओर से देश-विदेशों में यज्ञ, उपदेश, प्रवचन, भाषण, शंका-समाधान, संस्कृत, हिन्दी और वेदमन्त्र शिक्षण आदि के द्वारा जनता की सेवा करना।

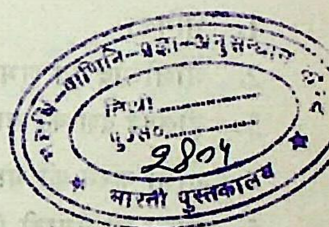
सम्प्रति—श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय गौतम नगर दिल्ली में अध्यापन कार्य कर रहे हैं।

निवेदक :

—प्रदीपकुमार शास्त्री

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समर्पण

जिनकी पवित्र गोदी में खेलकर बचपन व्यतीत किया, जिनकी पवित्र प्रेरणा से गुरुकुल में विद्याध्ययन करके इस योग्य बना, जिनका स्नेहयुक्त आशीर्वाद अन्तसमय तक मिलता रहा, उन्हीं पूज्य पिताश्री के ज्येष्ठ भ्राता मेरे ताऊ प्रातःस्मरणीय स्वर्गीय श्री रामकिशन जी को यह तुच्छ कृति समर्पित करता हूं।

–रामपाल शास्त्री

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भूमिका

प्रभु की अपार कृपा दृष्टि थी मुझ पर, जो कि मुझे गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण करने का अवसर प्राप्त हुआ।

"मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद:" को सूक्ति अनुसार मुझे माता-पिता के साथ-साथ आचार्य वर्ग का भरपूर स्नेह व आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

अध्ययनकाल में अनेक मित्रों का प्रेम व सहयोग भी मेरे लिए प्रेरणाप्रद बना।

कुछ वर्षों तक गुरुकुल झज्जर में अध्ययन के पश्चात् मैं आचार्य हरिदेव जी के सांनिध्य में दयानन्द वेद विद्यालय दिल्ली में आकर अध्ययन का क्रम आगे बढ़ाने लगा।

अध्ययन के अन्तिम कार्यकाल का समय था कि अचानक मेरा विदेश जाने का कार्यक्रम बन गया।

आचार्य हरिदेव जी के आशीर्वाद व भ्राता आनन्द जी, भाई कलपू जी के सहयोग से तीन मास की हालैण्ड यात्रा मेरी सफल रही।

इसके पश्चात् पुन: 1988 में पं० विश्वेश्वर जी, श्री गंगाप्रसाद जी के सहयोग से पुन: मेरी 4 मास होलैण्ड की प्रचार यात्रा बनी जो अत्यन्त सफल रही।

इन यात्राओं में अनेक प्रकार के अनुभव प्राप्त हुए। तथा भिन्न-भिन्न स्थानों का भ्रमण करने से अनेक जानकारियां भी प्राप्त हुईं।

यात्रा के पश्चात् मैंने कई बार मित्रों के आग्रह पर इस यात्रा को लेखनीबद्ध करने का यत्न किया परन्तु समयाभाव व मेरे जैसे बहुधन्धी व्यक्ति के लिए यह कुछ कठिन था इसलिए कुछ लेख लिखकर ही सन्तोष किया।

1989 में माता सुमंगला यति जी भारत यात्रा पर आईं तो आपने मुझे इस प्रकार पूर्ण यात्रा को लिखने के लिए आर्थिक सहायता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदान करने का वचन दिया। परन्तु मैंने कुछ ब्लाक आदि बनवाकर प्रारम्भकार्य को विराम दे दिया।

अकस्मात् 1991 मई में अब पुनः पं० विश्शेश्वर जी के निमन्त्रण पर जब होलैण्ड जाने का कार्यक्रम बना तो यह यात्रा लिखने के लिए श्री हरवीर जी शास्त्री आदि कई शुभचिन्तकों ने सुझाव दिया जो कि स्वीकार्य भी था सो मैंने लिखने का निश्चय कर लिखना आरम्भ कर दिया। पुस्तक तो लिखकर तैयार हो गई परन्तु चुनाव के कारण तथा शीघ्र ही होलैण्ड जाने से समयाभाव के कारण पुस्तक का छपना अत्यन्त कठिन था परन्तु श्री वेदव्रत जी शास्त्री आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक का मैं अति आभारी हूं। जोकि आपने केवल मात्र एक सप्ताह में यह पुस्तक तैयार कर मुझे कृतार्थ किया। आज के युग में पुस्तक छपवाना मेरे जैसे व्यक्ति के लिए असम्भव तो नहीं परन्तु कठिन अवश्य है, परन्तु इस कठिनाई को पं० विश्वेश्वर जी ने कुछ समय के लिए दस हजार रुपये देकर इस चिन्ता से मुक्त कर दिया। उसी का फल कि पुस्तक आपके हाथ में है। अगर पाठकों का सहयोग भविष्य में भी इसी प्रकार मिलता रहेगा तो शीघ्र ही मैं 1991 की यात्रा के साथ होलैण्ड आर्यसमाज का इतिहास विस्तृत रूप में लिखना चाहता हूं अतः पाठकगण इस पुस्तक की अशुद्धियों (कमियों) के साथ-साथ अपना तथा समाज का पूर्ण विवरण देकर मेरा सहयोग करें। जिससे मैं इस कार्य को अच्छे ढंग से कर सकूं। मैं मानता हूँ कि यह पुस्तक अधूरी है परन्तु यह पूर्ण आपके सहयोग से ही सम्भव है।

पुस्तक की प्रेस कापी तैयार करने में श्री प्रदीपकुमार जी शास्त्री, ब्रह्मचारी ब्रह्मप्रकाश ने अपना अमूल्य समय लगाकर मुझे सहयोग दिया।

हरवीर शास्त्री को ब्लाक आदि बनवाने में आवागमन के लिए सोमदेव शास्त्री ने अपना सहयोग दिया।

अगर श्रीमती उषा रामपाल जी का सहयोग नहीं मिलता तो यह सब कार्य इतना शीघ्र होना मुश्किल था। अन्य जिन भी साथियों ने इस पुस्तक को छपवाने में सुझाव व सहयोग दिया उन सबका मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूं।

—रामपाल शास्त्री

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं



"यशो गृहीत्वा पृथ्वीमनुसंचरेम"

हम यशस्वी होकर पृथ्वी पर विचरें। इस पावन सूक्ति के अनुसार प्रियवर श्री रामपाल जी शास्त्री ने गुरुकुल से स्नातक बनते ही पवित्र वेद प्रचार की भावना को अपने सात्विक अन्त:करण में संजोकर होलेण्ड, बेल्जियम, पेरिस आदि देशों में प्रथम बार सन् 1985 में सफल वेद प्रचार यात्रा की। जिसके परिणामस्वरूप वहां के निवासियों ने पुन: दूसरी व तीसरी बार आर्य वीर दल के संगठन व विभिन्न स्थानों पर आर्यसमाजों की स्थापना हेतु आमन्त्रित किया। इस बात का श्रेय व यश प्रियवर श्री रामपाल जी को मिलता है तो इसके साथ-साथ गुरुकुल वेद विद्यालय भी अछूता नहीं रहता। क्योंकि गुरुकुलों की स्थापना का उद्देश्य भी यही था कि गुरुकुल का ब्रह्मचारी यशस्वी होकर देश-विदेश में "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का नाद गुंजाए।

इसलिए प्रारम्भिक गुरुकुलों के सूत्रपात के युग में आर्यों ने सिंह गर्जना करते हुए उद्घोष किया था कि "आयेंगे खत अरब से जिनमें लिखा यह होगा, कि गुरुकुल का ब्रह्मचारी हलचल मचा रहा है"। इस प्रकार की पवित्र भावना वाले स्नातक गुरुकुलों से निकलकर वैदिक विचारधारा का डिमडिमघोष करेंगे तभी यह आर्य संस्कृति एवं वैदिक सभ्यता सुरक्षित रहे सकेगी। इन्हीं शब्दों के साथ जीवन के उज्ज्वल भविष्यत् की कामना करता हुआ—'अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु।

मंगलाभिकांक्षी :

हरिदेवाचार्य

वेद विद्यालय गोतमनगर।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा पोषित दिव्य युवाशक्ति

श्री रामपाल जी शास्त्री योगाचार्य सार्वदेशिक आर्य वीर दल के रजिस्टर्ड व्ययाम शिक्षक हैं। आप दयानन्द वेद विद्यालय गौतमनगर के सुयोग्य स्नातक हैं। आर्यसमाज के सभी कार्यक्रमों में आप तन मन से सहयोग करते हैं। समय-समय पर शिविरों का आयोजन करके नवयुवकों को योग एवं नैतिक शिक्षा प्रदान करते रहते हैं। देश के अनेक स्थानों पर शारीरिक प्रदर्शन करके युवकों को व्यायाम एवं सदाचार की प्रेरणा देते रहते हैं। 1985 एवं 1988 में दो बार होलैण्ड में जाकर आपने आर्यसमाज एवं आर्य वीर दल का बहुत कार्य किया है। आप एक होनहार एवं उत्साही युवक हैं। मेरी इच्छा है कि आप इसी प्रकार अपने कार्यक्रमों द्वारा युवकों को भारतीय संस्कृति की ओर प्रेरित करते रहें। मैं आपके उज्ज्वल भविष्यत् की कामना करता हुआ आशीर्वाद प्रदान करता हूं।

—आनन्द बोध सरस्वती
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली।
16-5-91

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा पोषित
दिव्य युवाशक्ति

सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा पोषित दिव्य युवा शक्ति के रूप में श्री रामपाल जी शास्त्री अभिनन्दनीय कार्य कर रहे हैं। अहम् भूमिम् अददाम् आर्याय का मूल उद्देश्य, इनके द्वारा क्रियान्वित होकर प्रभु भक्ति का स्वच्छ स्वरूप उभरे यह इनकी अन्तःकामना है। ईश्वर इसे पूर्ण करे।



बालदिवाकर हंस
प्रधान संचालक,
सार्वदेशिक आर्य वीर दल, नई-दिल्ली।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभाकर आर्यसमाज (रोतरदाम) होलैण्ड

गुरुकुल के सुयोग्य स्नातक, भारत से आए श्री रामपाल जी शास्त्री के साथ मेरा परिचय 1985 में हुआ जब वे पहली बार होलैण्ड में आये।

उसके बाद निरन्तर सम्पर्क बना हुआ है। सर्वप्रथम जब हमने उनके योगा के कार्यक्रमों को देखा एवं उनके विचारों को सुना तो हम अत्यन्त प्रभावित हुए।

रामपाल जी शास्त्री एक सच्चरित्र कर्मठ एवं अति उत्साही नवयुवक हैं, ऐसे-ऐसे समाजसेवकों पर भारत को गर्व है, जोकि गुरुकुलों की देन है। आशा है रामपाल जी शास्त्री ऋषि दयानन्द के विचारों एवं आर्यसमाज के सिद्धान्तों को तथा गुरुकुलों के उच्चादर्शों को जन-जन तक पहुंचायेंगे। प्रभु से मेरी प्रार्थना है कि वह आयु एवं शक्ति प्रदान करे जिससे कि रामपाल जी अधिक से अधिक जनों को आर्यसिद्धान्तों की शिक्षा दे सकें।

—जीवन गणेश
सभापति, प्रभाकर आर्यसमाज,
(रोतरदाम) होलैण्ड

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य सभा समाज (रोतरदास) होलैण्ड

आर्यसमाज रोतरदाम की स्थापना १९७६ में हुई, उन दिनों अपना मकान नहीं था, सरकारी पाठशाला में ही कार्यक्रम होता था कुछ समय पश्चात् 4 मंजिल का मकान खरीद कर मन्दिर बनाया। प्रति रविवार 3-30 बजे सत्संग होता है। इसके साथ-साथ समाज में 60-65 छात्र अध्ययन करते हैं।

गत तीन चार मास पूर्व भारत से आये हुए प्रकाण्ड विद्वान् पण्डित रामपाल जी शास्त्री जो योगा के अध्यापक हैं, जब उनके विचारों एवं अन्य यौगिक क्रियाओं को देखा तो उससे अभिभावक व बच्चे बहुत प्रभावित हुए। उनके कार्यक्रमों का यह प्रभाव हुआ कि लोग आर्यसमाज की ओर झुके तथा अपने बच्चों को भी पढ़ने के लिए भेजा। हम सब आर्यसमाजी उनके कार्यों से अत्यन्त प्रभावित हैं तथा कृतज्ञता प्रकट करते हुए प्रार्थना करते हैं कि वे पुनः आकर हमें प्रोत्साहित करें। हमारी प्रार्थना है कि प्रभु उन्हें शक्ति एवं सफलता प्रदान करें।

आपका शुभचिन्तक
विष्णुप्रसाद जयपाल सभापति
आर्य सभा समाज रोटरडाम
(होलैण्ड)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवा में,

श्री पं० रामपाल जी शास्त्री,

सप्रेम नमस्ते

आशा है प्रभु कृपा से स्वस्थ एवं सानन्द होंगे । आप द्वारा जो प्रचार होलैण्ड में हुआ उससे कौन आर्य प्रभावित नहीं हुआ होगा। आपके चरित्र एवं यौगिक क्रियाओं को देखकर सभी ने अचम्भा माना है। आपका वेदप्रचार भी बहुत उत्तम श्रेणी का था। प्रेम तथा आदर्श आपमें जो है वह आपके पूर्वजों तथा गुरुजनों की आशा पर ही निर्भर है। विद्या या धर्म का प्रचार भावी सन्तानों पर आश्रित है। भारत के विद्वान् तथा गुरुकुलों के स्नातक ही स्वामी दयानन्द जी के बताए मार्ग पर चलाने का काम करते हैं, और करते ही रहेंगे। इन्हीं आशाओं के साथ मैं आपके उज्ज्वल भविष्यत् की कामना करता हुआ उस सच्चिदानन्द सर्वप्रेरक प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि वह आपको शक्ति एवं आयु प्रदान करे जिससे कि आप जन जन तक ऋषि का सन्देश पहुँचा सकें।

आर. किशुनदयाल
आर्योपदेश नीदरलैंड
होलैण्ड

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालसखा जिन पर हमें नाज है

आपका जन्म हरयाणा प्रान्त के रोहतक मण्डलान्तर्गत ईस्माईला ग्राम में श्री रामपत जी के घर 1960 में हुआ। आपकी माता का नाम श्रीमती दिलभरी है।

प्रारम्भिक शिक्षा गांव में पूरी करके आचार्य भगवान्देव (स्वामी ओमानन्द जी महाराज) की प्रेरणा से 1973 में गुरुकुल झज्जर रोहतक हरयाणा में प्रविष्ट हुए। 5.6 वर्षों तक अध्ययन करने के पश्चात् आप श्री आचार्य हरिदेव जी के पास दयानन्द वेद विद्यालय में आकर अध्ययन को आगे बढ़ाने लगे।

प्रारम्भ से ही आप कर्मठ लग्नशील हैं। सामाजिक कार्यों में आपकी रुचि अत्यधिक है।

आपका परिवार एक कट्टर वेदान्ती परिवार था, प्रारम्भ से ही सन्तों की सेवा का सौभाग्य आपको तथा आपके परिवार को प्राप्त रहा है 1985 में आप वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए होलैण्ड बेलजियम पेरिस आदि देशों में गये। पुनः 1988 में आपको प्रचार का सुअवसर मिला।

होलैण्ड में दो बार आपकी प्रचार यात्रा का बड़ा अच्छा प्रभाव रहा, जिसके फलस्वरूप आप पुनः तीसरी बार होलैण्ड जा रहे हैं।

आपने मध्यमा शास्त्री शिक्षाशास्त्री तथा कर्मकाण्ड एवं साहित्याचार्य की उपाधि प्राप्त की है, योग का डिप्लोमा भी आपने प्राप्त किया है।

आप सर्वदेशिक आर्यवीर दल के माध्यम से तथा दयानन्द वेद विद्यालय के वेद प्रचार विभाग की ओर से अनेक स्थानों पर सफल प्रचार कार्य कर चुके हैं। स्थान-स्थान पर शिविरों का आयोजन कर अपने योग व शक्ति प्रदर्शन के द्वारा अनेक नौजवानों को अपनी ओर आकृष्ट किया है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह आपका परम सौभाग्य है कि आपको स्वविचारानुकूल ही धर्मपत्नी श्रीमती उषा जी मिली जो आपके प्रत्येक सामाजिक कार्य में सहयोग कर आपको शक्ति प्रदान करती है।

सम्प्रति आप दयानन्द वेद विद्यालय में अध्यापन कार्य के साथ-साथ सार्वदेशिक आर्य वीरदल का भी कार्य करते हैं। परमात्मा आपको दीर्घायु प्रदान करे जिससे आप अधिक से अधिक प्रचार कार्य कर सकें। इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ।

देवपाल शास्त्री
मकड़ोली (रोहतक)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुपम कार्यक्षमता

श्री रामपाल शास्त्री के साथ हमारा कई वर्षों से घनिष्ठ सम्बन्ध है।

गुरुकुल झज्जर में जहां हम सब एक साथ रहते थे सो दयानन्द वेद विद्यालय में भी जारी है।

आपकी कार्यशैली व कर्मठता को देखकर हम कई बार आपको "पागल हो गया" ऐसा कहते हैं, क्योंकि दिन-रात जब भी किसी ने कहा तुरन्त उस कार्य के लिए अपना कार्य छोड़कर उसके कार्य को करने के लिए निकल पड़ते थे। आपनें अपने जीवन में अब तक न तो आराम किया न ही हम जैसे साथियों को करने दिया।

गृहस्थाश्रम में आने पर भी इस समय निजी कार्यों को छोड़कर सेवा में लगे रहते हैं। "सेवा परम धर्म है" इस वाक्य को आपनें अपने जीवन का उद्देश्य बनाया हुआ है।

परमात्मा आपको शक्ति प्रदान करे कि आप अपनें लक्ष्य की ओर अग्रसर होते हुवे सदा आगे बढ़ते रहें। यहि हमारी शुभ कामना है।

सोमदेव शास्त्री
हरवीर शास्त्री

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होलैण्ड परिचय

हॉलैण्ड एक देश है जो कि यूरोप में स्थित है। इस देश की जनसंख्या 15000000 है। इनमें भिन्न-भिन्न धर्मों के पालन करनेवालों की गणना की गई है। ये मुस्लिम, हिन्दू, सिख, ईसाई तथा अन्य धर्मों को माननेवाले हैं। यह एक सुखी तथा सम्पन्न देश है। यहां के लोग पारस्परिक अदावत से नहीं रहते हैं। इस देश में निवास करनेवाले व्यक्ति अंग्रेज हैं। इनकी भाषा मौखिक तथा लिखित रूप से डच है। यहां की संक्रान्तियों को राजपाट की तरफ से मासिक सहायता दी जाती है। चाहे यह समाज धार्मिक व नाच-गान का कार्य करता हो। इस देश को बारह भागों में विभाजित किया गया है। जो निम्नलिखित हैं—नोर्थ होलान्द जिसमें अमस्तरदाम स्थित है। साउथ होलन्द जिसमें देनहाख और रोटरदाम स्थित है। द्रेन्त, फ्रीसलान्द, खेलदरलान्द, ख्रोनिगन, लिम्वर्ग, नोर्द व्रावान्द, ओवर आईसल्, अत्रैख्त जेलान्द।

इन सभी भागों में से नोर्थ होलान्द प्रसिद्ध है। क्योंकि इस भाग में राजधानी अमस्तरदाम स्थित है। इसी जगह के पास हवाई अड्डा स्थीपहोल भी है। इस राजधानी का नाम अमस्तरदाम है। इस राजधानी का नाम इसलिए अमस्तरदाम पड़ा है क्योंकि 27-7-5 में काऊन्ट क्लोरीस v नें अमस्तल नदी को बांध दिया। डच में बांध को दाम कहा जाता है। इसलिए जो भूमि उस नदी के इर्द-गिर्द थी उसका नाम अमस्तरदाम रख दिया था। डच में अमस्तरदाम का अर्थ अमस्तल का बांध है।

रोतरदाम में विश्व का सबसे बड़ा तथा उन्नति करनेंवाला बन्दरगाह है।

इस देश के दो साहचर्य्य हैं। I के. एल. एम., II त्रन्साविया हॉलैण्ड।

हॉलैण्ड दो कारणों से अधिक विख्यात है। जिनमें पहला है पुष्पों (फूलों) की खेती। यहां के लोग ज्यादा-से-ज्यादा परिश्रम करके इसकी खेती करते हैं। इनको पेरिस भेज दिया जाता है। यहाँ पर इनसे इत्र बनाकर दूसरे देशों में भेज दिया जाता है। हॉलैण्ड में फूलों को देखने के लिए (कैसी इसकी खेती की जाती है) एक विस्तीर्ण उपवन है। यह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-विदेश में प्रसिद्ध है। इसमें चलचित्र के लिए अभिनेत्रियों के द्वारा सूटिंग की जाती है।

दूसरा कारण है दूध। हॉलैण्ड में दूध बहुत अधिक होता है, इसलिए बहुत ही सस्ता है। दूध से सैकड़ों प्रकार का मक्खन बनाया जाता है तथा विदेशों में भेजा जाता है।

इस देश में अनेक दर्शनीय स्थान हैं जैसे प्राचीन दुर्ग, चर्च व गुफाएं। देनहाख में मादूरोदाम पार्क है। जिसमें हॉलैण्ड का सूक्ष्मचित्र बनाया गया है। अमस्तरदाम में अर्तिस नामक चिड़ियाघर तथा रोलरदाम में ब्लाईदोर्प नामक पशुवाटिका इत्यादि। भारत के अप्पूघर के समान अनेक पार्क हैं। एफतलिग, बेक्स बैर्गन, हारदरवाईक में होंगगूरो के द्वारा खेल दिखाया जाता है। इस प्रकार से अनेक महत्त्वपूर्ण देखने योग्य संग्रहालय बड़े-बड़े बांध (दाम) एवं एरोमास जैसी बड़ी मीनारें भी हैं।

यात्रा करने की भावना कैसे बनी

1974 में स्वामी जगदीश्वरानन्द जी महाराज के साथ एक बालक गुरुकुल झज्जर में आया। मिलने पर पता चला कि यह बालक अमेरिका से आया है। इसका नाम आनन्द कुमार बिरजा है। अपने माता-पिता परिवार व देश को छोड़कर 13-14 वर्ष का यह बालक क्यों आया है जब इस प्रकार का प्रश्न हम आपस में मिलकर करते तो इस बालक आनन्द कुमार ने कहा कि मैं विद्वान् बनने आया हूं और विद्वान् बनकर अपने देश में प्रचार करूंगा। हम सभी बालक थे। अधिक ज्ञान तो नहीं रखते थे परन्तु भावना व सुनने से यह तो हमें पता होगया था कि गुरुकुल में सभी पढ़कर प्रचार करने में लग जाते तथा लगना चाहिए। ऐसी हमारी भावना थी।

भारत के प्रायः सभी गुरुकुलों का निरीक्षण करके देखें तो छात्र जीवन में जितने कष्ट जितनी तपस्या गुरुकुल झज्जर में करनी पड़ती है शायद किसी दूसरे गुरुकुल में नहीं करनी पड़ती। हमारे साथ प्रवेश हुए कितने ही छात्र मास या दो मास के पश्चात् घर पर भाग गये और सर्दी आने पर तो नये छात्रों में से 10-15 ही छात्र शेष रहे। हम भी इस प्रकार के कष्टों को देखकर सोचने लगे कि यह विदेशी यहां पर कैसे रहेगा। जबकि यहां पर तो हरियाणा प्रदेश के ही बच्चे भाग

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाते हैं कष्टों के भय से। परन्तु आनन्द सब कष्टों को झेलता हुआ पढ़ने में लगा रहा। जीवन में अनेक उत्थान पतन आये परन्तु यह अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होता गया। 1985 में आनन्द कुमार गुरुकुल कांगड़ी में वेद से एम० ए० कर रहा था तथा मैं दयानन्द वेद विद्यालय में अध्ययन अध्यापन कार्य कर रहा था। तो पं० जीवन गणेश जी आदि पण्डितों ने मिलकर प्रभाकर समाज की ओर से आनन्द को हॉलैण्ड में आमंत्रित किया।

आनन्द कुमार हमारा अत्यन्त निकट का मित्र था। अतः समय-समय पर जब भी कोई हॉलैण्ड अथवा सूरीनाम से आया तो मुझसे अवश्य ही मिलवाता तथा गांव में हरियाणा में भी ले जाते थे। इस कारण से हॉलैण्ड के लोगों से मेरा परिचय कुछ-कुछ होगया था। जैसे भाई गंगाप्रसाद जी कलपु आदि।

1985 में जिस समय आनन्द कुमार जी हॉलैण्ड जानें की तैयारी कर रहे थे तो आचार्य हरिदेव जी गुरुकुल गौतम नगर ने अनायास ही आनन्द को कहा कि तुम अकेले जारहे हो क्यों नहीं अपने मित्र रामपाल को भी ले जाते।

बस उसी दिन ही आनन्द ने भाई कलपु जी के पास मेरे द्वारा स्पोनसर हेतु पत्र लिखवाया। भाई कलपु जी को पत्र मिलते ही उन्होंने अपना स्पोन्सर पत्र भेज दिया।

यात्रा की तैयारी

भाई गंगाप्रशाद जी कलपु का पत्र आते ही आनन्द जी ने सब कार्य यथाशीघ्र करवाये। पासपोर्ट तो पहले से ही डा० सत्यकेतु जी विद्यालंकार के दामाद श्री अशोक त्रिखा ने बनवा दिया था। टिकट आदि के लिए मैं पुनः श्री त्रिखा जी के पास गया। आपने सब काम बड़ी सरलता से करवा दिया।

आनन्द कुमार जी और मैं दोनों एक साथ जाना चाहते थे परन्तु बिजा न मिलने से आनन्द जी मेरे से एक मास पूर्व चले गये। अब होलैण्ड से आनन्द जी ने तथा श्री जौन बख्शी ने वीजा सम्बन्धी कार्य वहां से करवा भिजवा दिया।

22 जून रात्रि को मैं जानें के लिए गुरुकुल के सभी ब्रह्मचारियों से शुभ कामना प्राप्त कर तथा आचार्यवर्ग एवं परिवारजनों से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशीर्वाद लेकर जब एयरपोर्ट जानें के लिए प्रस्थान किया तो अचानक हैजा हो गया।

एयरपोर्ट पर जब स्थिति बिगड़ती देखी तो हमारे परिवारजनों नें वहीं पर एडमिट करा दिया। औषधो आदि लेकर मैंने यात्रा आरम्भ कर दी थी। सामान आदि की कोई कठिनाई नहीं हुई।

जीवन की यह पहली हवाईयात्रा थी मन में कुछ भय न था। तुरन्त परमात्मा की दया से सब कुशल मंगल रहा। वहां पर अमस्टर डाम में विशाल एयरपोर्ट पर उतरकर जब मैं बाहर आया तो भ्राता आनन्द जी, भाई कलपु जी, पं० जीवन जी, आशा बहन, तिया जी जौन बन्शी जी इत्यादि आर्य सज्जन लेनें के लिए आए हुए थे।

होलेण्ड की भूमि पर हवाई अड्डे से बाहर आने में कोई कठिनाई नहीं हुई शायद धोती कुर्ता (वेश-भूषा) को देखकर चैंकिंग आदि भी नहीं की।

भाई आनन्द जी के साथ कलपु जी की गाड़ी में बैठकर सूतर मेर जहां कि बहन आशा का घर था के लिए रवाना हो गये।

विशाल सड़कों तथा खेत खलिहानों में से होता हुआ, बहन आशा के घर पर गए। वहां जाकर स्नान-ध्यान-भोजन करने के बाद विश्राम किया।

इस यात्रा का मेरा उद्देश्य प्रचार नहीं था, परन्तु २ मास में सम्पूर्ण होलेण्ड तथा वेलजियम व पेरिस घूमने के बाद अब क्या करूं यह विचारणीय विषय होगया।

भ्राता आनन्द जी ने प्रभाकर आर्यसमाज तथा आर्य सभा समाज के द्वारा प्रचार कार्य आरम्भ कर दिया। ३ मास की इस यात्रा में बहन आशा बन्शी के यहां पर भी रहता था परन्तु अधिक समय मैत्री श्री पं० जीवन गणेश जी के घर पर रहा। होलेण्ड में पं० जी अपनी गाड़ी से घुमाने ले जाते थे। पण्डित सूर्यावर्त गणेश जी बहुत ही सभ्य एवं आदर्श महिला है। अतिथि सेवा तो आपका भूषण है।

लगभग ३ मास तक भ्रमण तथा प्रचार करने के पश्चात् मैं वीजा अवधि में ही भारत लौट आया।

होलेण्ड से आने के बाद तो वहां के लोगों से ऐसा सम्पर्क बना कि कोई-न-कोई हर समय यहां आता ही रहता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1985 को इस यात्रा में मुझे पं० जीवन गणेश जी तथा बहन आशा बख्शी व भाई गंगाप्रसाद जी कलपु नें जो सहयोगकिया उसके लिए मैं उनका आभारी हूँ।

प्रभाकर आर्यसमाज व आर्य सभा समाज नें भी पूर्ण सहयोग दिया।

होलैण्ड में आर्यसमाज

2 जुलाई 1988 को मुझे होलैण्ड में 4 मास वैदिक धर्म प्रचार के लिए जाने का अवसर प्राप्त हुआ। इससे पूर्व भी 1985 में मुझे वहीं जाने का अवसर प्राप्त हुआ था।

सन् 1875 में बम्बई नगरी में स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्यसमाज आज सभी देश-विदेशों में फैलता हुआ जन-मानस तक पहुँचकर वैदिक संस्कृति व सभ्यता को सुरक्षित रख रहा है, तथा "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के जयघोष को सार्थक कर रहा है।

यूरोप के अन्दर होलैण्ड नामक इस देश में भी आर्यसमाज का अच्छा प्रचार है। होलैण्ड एक बहुत सुन्दर व सम्पन्न देश है। होलैण्ड में रहने वाले भारतीयों का इतिहास एक सुन्दर इतिहास है। आज से लगभग 135 साल पहले जिस समय भारत गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था उस समय हमारे कुछ भारतीय भाइयों को बन्धुआ मजदूर बनाकर मोरीशस फिजी व सूरीनाम आदि उपनिवेशों में ले जाया गया था। उस समय इन भारतीयों के ऊपर अनेक प्रकार के प्रतिवन्ध थे। जैसे धार्मिक पुस्तकें ले जाने पर प्रतिबन्ध था। परन्तु भारत के उन वीरों ने जिनके अन्दर अपनें धर्म के प्रति श्रद्धा थी, वे लोग अपने ढंग से कुछ पुस्तकें ले गये थे। अपनी धार्मिक मनोवृत्तियों के कारण साहित्य की सहायता से ये लोग चाहे मारीशस गये या फिजी या सूरीनाम, वहीं पर अपना प्रचार करना शुरू कर दिया। होलैण्ड में आर्यसमाज पर लिखने से पहले सूरीनाम के विषय में लिखना भी अनिवार्य समझता हूं। सभाओं द्वारा तथा कुछ स्वतन्त्र रूप से भी अनेक विद्वान् वहां पर गये और प्रचार कार्य को आगे बढ़ाया।

सन् 1911 में भारत के प्रसिद्ध वैदिक प्रचारक पूज्य पं० भाई परमानन्द जी ब्रिटिश गयाना (डेमेरारा) में गये। वहां के लोगों को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने वैदिक धर्म के प्रति प्रभावित करके वैदिक धर्म की ज्योति को जगाया।

उसके बाद तो एक के बाद एक विद्वान् उपदेशक वहां पर जाने लगे तथा वहां पर कुछ कर्मठ कार्यकर्ता व पण्डित तैयार किये गये जिनके पुरुषार्थ से आर्यसमाज उन्नति की ओर अग्रसर होने लगा।

सूरीनाम देश लगभग 350 वर्षों से होलैण्ड के अधिकार में था। सूरीनाम से समय-समय पर भारतीय होलैण्ड में आते थे। सन् 1975 में सूरीनाम देश आजाद हुआ। आजादी से पूर्व कुछ भारतीय होलैण्ड में आकर बस गये थे। लेकिन जिस समय सूरीनाम आजाद हुआ उस समय होलैण्ड सरकार ने सूरीनाम वासियों को होलैण्ड की नागरिकता स्वीकार करने के लिए सुविधा दी तो अनेक भारतीय सूरीनाम से आकर होलैण्ड में बस गये।

होलैण्ड में आर्यसमाज का प्रचार का आरम्भ काल 1961 था। श्रीमती मंगला जी (सुमंगलायति) संन्यासिनी जिस समय होलैण्ड में आर्य दिवाकर सभा से हिन्दी शिक्षिका एवं पण्डित की उपाधि लेकर आईं तो उस समय होलैण्ड में नाममात्र के ही भारतीय थे। संख्या में ज्यादा न होते हुए भी मंगला जी ने सबको इकट्ठा किया। अपने वैदिक (हिन्दू) धर्म के अनुसार हवन, सत्संग व अपने त्यौहार मनाने आरम्भ कर दिये। कई वर्षों तक परिवारों में हवन सत्संग होता रहा और संख्या भी धीरे-धीरे बढ़ती गई।

28-8-1968 में सभी आर्यभाइयों ने मिलकर आर्यसमाज की स्थापना की जिसमें 17 व्यक्ति उपस्थित हुए। अधिकारी चुनकर यथोचित रूप से समाज की स्थापना हो गई। प्रचारिका के रूप में श्रीमती मंगला जी को चुना गया। इस समाज स्थापना में श्री पं० उदयराजसिंह वर्मा जी, पं० रामरूप जी आर्य, श्री एम. आर. जी, पं० रंगू जी आदि को अधिकारी चुना गया।

13 जनवरी 1969 को अचानक आर्यसमाज के स्तम्भ श्री उदयराजसिंह वर्मा का हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। आर्य-समाज की बड़ी हानि हुई। इस घटना के बाद पं० रामरूप जी होलैण्ड में आये और आर्यसमाज की बागडोर अपने हाथों में सम्भाली।

1971 में आर्यसमाज को रजिस्टर्ड करवाया। इससे पूर्व केवल मात्र ईसाइयों को ही मान्यता मिलती थी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय तक सूरीनाम के काफी लोग आकर हालैण्ड में बस गये और आर्यसमाज की ज्योति को देदीप्यमान करने में लग गये। इनके अनेक सहयोगी और भी हो गये और अनेक शहरों में आर्यसमाज की स्थापना होने लगी।

श्री पं० ऋषि तिवारी जी, (अगस्टर्डम) श्री बहस्पति नारायण, (रोटरडैम) अवधबिहारी जी, (डैनहाग) श्री दातादीन जी, श्री पं० रामनारायण रामतरंग जी, पं० रामकिशोर जी, पं० मंगला जी, (डेनहाग), श्री पं० जीवन गणेश जी, पं० विष्णु जयपाल जी, श्री पं० डिहल जी, पं० रामदेव रामावतार जी अनेक आर्य सज्जनों एवं पण्डितों द्वारा हालेण्ड के नगर-नगर, ग्राम-ताम में आर्यसमाज का प्रचार आरम्भ होगया।

सूरीनाम व भारत से समय-समय पर अनेक प्रचारक सभाओं द्वारा एवं स्वतन्त्र रूप से वहां जाकर कार्य को आगे बढ़ाने में सहयोग देते रहे।

वर्तमान समय में हालेण्ड के अन्दर कुल जनसंख्या 1 करोड़ साठ लाख के करीब है। हालैण्ड में कुल भारतीय मूल के निवासी तीन लाख के लगभग हैं। हिन्दुओं की संख्या एक लाख तीस हजार के आसपास है। आर्यसमाज की सदस्यता 50 से 55 हजार के बीच में है। इस समय हालैण्ड के अन्दर 33 आर्यसमाज प्रतिनिधि के साथ रजिस्टर्ड हैं तथा 2-3 समाजें स्वतन्त्र रूप से हैं। जो वहां के आर्य भाइयों ने अपने धर्म व संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए बनवाई हुई थी। जैसे जन अधिकार सेवा संघ, हिन्दू धर्म शोध संगठन इत्यादि। यहां पर समस्त हालैण्ड के विषय पर तो विस्तार से नहीं लिख पाऊंगा विशेष विवरण मेरी विदेश यात्रा नामक पुस्तक में पढ़ें।

चार मास के इस प्रचार कार्य में मुझे केवल मात्र 15 समाजों में ही जाने का अवसर प्राप्त हुआ। सभी समाजों का परिचय व इतिहास मैं यहां पर नहीं लिख पाऊंगा। संक्षेप में कुछ लिख रहा हूं।

हालैण्ड में आर्यसमाज का प्रचार करने के लिए अनेक उपदेशक विद्वान् पण्डित समय-समय पर गए हैं, तथा आगे भी जायेंगे। लेकिन आर्य वीर दल के प्रचारं कार्यक्रम पर कम ही ध्यान देते थे। इस वर्ष जब मुझे हालैण्ड जाने का वीसा मिला तो मैं गुरुकुल झज्जर में सार्वदेशिक आर्य वीर द्वारा लगाये गए व्यायाम-शिक्षण शिविर में था।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिविर की समाप्ति पर आचार्य देवव्रत जी नें स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा मुझे प्रमाण-पत्र व आर्य वीर दल का ओ३म् ध्वज प्रदान कराया। स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती, स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, आचार्य हरिदेव जी, आचार्य श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय दिल्ली, बाल दिवाकर जी हंस प्रधान संचालक, सार्वदेशिक आर्य वीर दल, स्वामी धर्मानन्द जी (उड़ीसा), आचार्य धर्मपाल जी ततारपुर व आचार्य देवव्रत जी आदि सभी नें मुझे प्रेरणाप्रद उपदेश व आशीर्वाद दिया।

1985 में हालैण्ड यात्रा के दौरान मैं केवल प्रभाकर आर्यसमाज रोटरडैम में ही आर्य वीर दल की स्थापना कर पाया था। परन्तु इस वर्ष मैंने 8 और अन्य समाजों में आर्य वीरदल की शाखाओं की स्थापना की। आर्य वीरदल के काय को इस प्रकार बढ़ाने में जो सहयोग मान्य पं० विश्वेश्वर जी उपमन्त्री आर्य समाज प्रभाकर, श्री राजगोपालाचार्य जी तुकुन सभापति आर्य वीरदल प्रभाकर समाज रोटरडैम, पं० विष्णुदयाल जी सभापति आर्य सभा रोटरडैम, तुकुन जी सैफकाम मन्त्री आर्य वीरदल प्रभाकर रोटरडैम व पं० जीवन गणेश जी मन्त्री प्रभाकर आर्यसमाज रोटरडैम ने दिया। अगर आप सबका सहयोग नहीं मिलता तो शायद मैं आर्य वीरदल व वैदिक धर्म का प्रचार इतना नहीं कर सकता था। प्रत्येक समाज में आर्य वीरदल की शाखा हो इसके लिए प्रभाकर व आर्य सभा समाज का विशेष योगदान रहा था। सभी समाजों में आर्य वीरदल शिविरों का आयोजन इन दोनों समाजों के सहयोग से होता था।

इस यात्रा में मुझे आदरणीय पं० उषर्बुध जी के दर्शन हुए जिन्होंने सूरीनाम गायना आदि देशों में आर्य वीरदल का विशेष कार्य किया है पं० जी 10 दिन हालैण्ड यात्रा पर आए थे। उन्होंने मुझे भरपूर आशीर्वाद व सहयोग दिया। आर्य वीरदल प्रभाकर आर्यसमाज रोटर-डैम में लगे आर्य वीरदल के शिविर का समापन करते हुए पं० जी ने आर्य वीरदल के इतिहास पर तथा आवश्यकताओं पर प्रकाश डाला व छात्र-छात्राओं को प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार दिए।

यात्रा विवरण सन् 1988

1988 की होलैण्ड यात्रा में मुझे कोई विशेष कठिनाई नहीं होने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाई, क्योंकि मैं इस समय तक इस विषय में काफी जानकारी प्राप्त कर चुका था। भाई कल्पू जी के स्पोंसर पर एवं विश्वेश्वर जी के सहयोग से होलैण्ड का सब कार्य सुगमता से हो गया।

यहां पर वीजा एवं टिकट के लिए बहन संय्यु दीदी एवं श्री कृष्णन ने सहयोग देकर कार्य आसान कर दिया। शेष तैयारी में हरवीर शास्त्री एवं सोमदेव शास्त्री ने पूरा सहयोग दिया।

यात्रा प्रारम्भ से पहले सभी ने वेद विद्यालय के विशाल भवन में शुभकामनायें दीं। जिसमें स्वामी जीवानन्द जी, आचार्य हरिदेव जी, प्रदीपकुमार जी शास्त्री, विरजानन्द जी दैवकरणि, देवपाल शास्त्री, हरवीर शास्त्री, सोमदेव शास्त्री आदि अनेक साथियों के अतिरिक्त परिवार के सभी सदस्य विदाई देने के लिए आये थे।

सभी आए हुए लोगों से विदाई लेकर हवाई अड्डे में प्रवेश किया। वहां पर श्री राजपाल जी व श्री बोरा जी के सहयोग से मुझे कोई कठिनाई नहीं हुई।

यात्रा आरम्भ

पूर्ण विवरण

एक जुलाई को सभी तैयारियां पूर्ण कर दयानन्द वेद विद्यालय के विशाल प्रांगण में श्री आचार्य हरिदेव जी, श्री पं० वेदपाल जी सूनीथ, स्वामी जीवानन्द जी नैष्ठिक, श्री विरजानन्द जी दैवकरणि इत्यादि विद्वानों से तथा अन्य मित्रमण्डली तथा परिवार जनों से आशीर्वाद प्राप्त कर कुछ बड़े ब्रह्मचारियों तथा परिवार जनों सहित एक बस से हवाई अड्डे के लिए प्रस्थान किया। हवाई अड्डे पर सभी कार्य श्री राजपाल जी के सहयोग से निर्विघ्न सम्पन्न हो गया। 12 बजे सभी परिवार जनों को अभिवादन कर मैं यान में बैठने हेतु अन्दर गया। यात्री विश्राम कक्ष में कुछ विश्राम कर अन्य सभी यात्रियों के साथ मैं भी एयर इण्डिया के हवाई जहाज में उपस्थित हुआ।

2 जुलाई को प्रातः 1 बजकर 30 मिनट पर 300 यात्रियों वाला यह हवाई जहाज भारत की भूमि को छोड़कर आकाश में बिचरण करता हुआ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने लगा। 1000 कि.मी. प्रति घण्टा की गति से उड़ता हुआ यान होलैण्ड के एयरपोर्ट

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमस्टरडेम में वहां के समयानुसार प्रात: 9 बजकर 30 मिनट पर पहुंचा। एयर इण्डिया के इस यान में 300 यात्रियों के अतिरिक्त 21 कर्मचारी कमाण्डर श्री मेहता के नेतृत्व में कार्य पर थे।

एयर पोर्ट पर अंग्रेजी न जानने के कारण कुछ कठिनाई उपस्थित हुई परन्तु एक मद्रास के सज्जन ने मेरी सहायता कर समस्या हल की। एयरपोर्ट पर बाहर श्री पं० विश्वेश्वर जी मन्त्री प्रभाकर आर्य समाज व भाई श्री राजगोपाल आचार्य तुकून जी सभापति आर्य वीर दल रोटरडाम के साथ अन्य आर्यजन स्वागतार्थ उपस्थित थे।

एयरपोर्ट से सीधे पं० विश्वेश्वर जी के घर पर आये। स्नान ध्यान भोजन आदि से निवृत हो मैंने अपने छोटे भाई पहलवान सुरेश कुमार के पास फोन किया। हरवीर व सोमदेव से भी बातचीत की। 2 जुलाई को प्रात: सभी दिनचर्या से निवृत होकर रविवार होने के कारण मैं सबसे पहले प्रभाकर आर्यसमाज में गया वहां पर सभी परिचितों से मिलने के पश्चात् प्रवचन का कार्य समाप्त कर मैं आर्य सभा समाज में प्रवचन हेतु गया। वहां पर श्री पं० जयपाल जी आदि सभी पण्डितों एवं अधिकारियों से मुलाकात हुई। प्रवचन के पश्चात् सायंकाल श्री पं० हरि विश्वेश्वर जी के छोटे भाई श्री जगदीश जी विश्वेश्वर के घर पर मिलने गया। रात्रि में पुन: पण्डित जी के घर पर आकर भोजन आदि से निवृत हो कुछ अन्य स्थानों पर टेलीफोन किया।

6 जुलाई को रोटरडाम पुलिस में रजिस्ट्रेशन के पश्चात् श्री पं० विश्वेश्वर जी व पं० रामावतार जी के साथ एक हवन में प्रवचन हेतु आ गया।

7 जुलाई को होलैण्ड के सबसे बड़े पौराणिक तिबीति मन्दिर में प्रवचन किया। 9 जुलाई को भ्राता आनन्द कुमार जी के जीजा जी एवं बहन आशा जी के साथ उनके घर पर गया। 10 को प्रात: पं० विश्वेश्वर जी के पास आकर प्रात: पौराणिक मन्दिर में प्रवचन के पश्चात् प्रभाकर आर्यसमाज के कार्यक्रम कर सायंकाल आर्यसमाज दोरद्रखत में प्रवचन दिया। 11 को श्री पण्डिता चन्द्रकली सिंह जी के घर पर गया। वहां पर महेश योगी जी की एक शिष्या से वार्तालाप हुआ। 12 को भाई गंगाप्रसाद जी कलपु के साथ देनहाक घर पर गया। वहां पर सभी से मुलाकात कर भाई कलपु जी के साथ श्रीमती

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्दु श्रीवास्तव से मिला। आप भारत सरकार की ओर से विश्वविद्यालय में संस्कृत पढ़ाने हेतु नियुक्त हैं। आपका जन्म आर्यसमाज के महाविद्वान् वेदों के भाष्यकर्त्ता पं० क्षेमकरण जी के परिवार में हुआ। आपके पति श्रीवास्तव जी होलैण्ड में बहुत बड़े डाक्टर हैं। श्रीमती इन्दु श्रीवास्तव काशी विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त हैं। आपसे मिलने के पश्चात् रात्री को श्री श्रद्धानन्द मलहु, पं० सुमित्रा मलहु तथा रामानन्द भगेलु से मिलकर, घर जाकर विश्राम किया।

14 जुलाई को पं० हरि विश्वेश्वर जी की धर्मपत्नी श्रीमती पण्डिता चन्द्रदेई विश्वेश्वर जी का घर पर उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार किया। सायंकाल कलपु जी के साथ देनहाक गया वहां पर श्री पं० सुखराज जी से मिला। 15 को सुखराज जी के साथ उनके परिवार में एक मकान पर हवन प्रवचन किया तथा 16 को विवाह संस्कार करवाकर रात्री में रोटरडाम घर पर आया। 17 को आर्य समाज दोरद्रखत में प्रवचन कर सायंकाल 6 बजे श्री पं० सुखधन जी के घर पर हवन प्रवचन किया। 18 जुलाई को श्री पं० रामावतार जी के साथ उनकी बहन की अन्तेष्टि में गया। 19 जुलाई को प्रभाकर आर्यसमाज में आर्य वीर दल द्वारा योग शिविर आरम्भ किया। 20 जुलाई को आर्य सभा द्वारा दो दिन का विशेष वेद यज्ञ रखा गया जिसमें एक दिन प्रवचन इतिहास पर उनकी मांग के अनुसार दिया गया तथा एक दिन वेद प्रवचन किया। 22 जुलाई को श्री पं० सुखधन जी के पुत्र के विवाह उपलक्ष्य में मकान पर यज्ञ व प्रवचन किया तथा 23 जुलाई को विवाह संस्कार सम्पन्न किया। 24 जुलाई को देनहाक में दयानन्द सभा समाज में प्रवचन किया तथा उसके पश्चात् श्री जोन जी व आशा बन्शी के साथ देनहाक में कुछ देखने गया। रात्री को आशा बन्शी के यहां पर रुका। 25 को प्रभाकर आर्यसमाज में योगा की कक्षा के पश्चात् श्री तुक्कन जी के साथ उनके घर पर सैफकाम गया। रात्री को श्री पं० बलवन्त गौतम जी को पढ़ाने उनके घर गया। 26 को प्रातः पण्डिता शनीचर कारला जी के यहां पहुंचा। 27 को श्री पं० विश्वेश्वर जी, श्री नारायण दोदा जी के साथ अमस्तरडाम टिकट ओके कराने गया। वहां पर सब कार्य सम्पन्न कर मैं आर्य सभा समाज में गया। यहां पर आज एक विशेष पण्डित वर्ग की बैठक शंका समाधान हेतु रखी गई थी। 28 को पुनः दोदा जी जी के साथ वीजा बढ़वाने हेतु गया तथा रात्री में आपके यहां पर विश्राम किया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

29 को माता डिहल जी पास घर पर मिलने गया। 30 को आर्यसमाज में श्री कृष्ण जी के पुत्र का मुण्डन संस्कार किया तत्पश्चात् श्री तुक्रन जी के साथ सेफकाम में घर पर गया। 31 को प्रात: तुक्रन जी के परिवार में एक मुण्डन संस्कार करवाने के पश्चात् आर्यसमाज अमस्टरडाम में प्रवचन किया।

एक अगस्त को पं० बलवन्त गौतम जी के मन्दिर में हिन्दी एवं योग की कक्षा आरम्भ की। 2 अगस्त को प्रभाकर समाज में योग की कक्षा की। 3 को आशा बन्शी के घर पर गया। रात्रि को वहीं पर रुका तथा चार को प्रात: आशा की छोटी बहन विद्या को पुत्री का मुण्डन संस्कार किया। 5 अगस्त को पं० ज्ञानी जो देनहाक की पुत्रियों का यज्ञोपवीत संस्कार किया। आज अचानक एक दुर्घटना की खबर हुई, श्री गंयाप्रसाद मलहु जी की पत्नी का अचानक स्वर्गवास होगया। मुझसे आपका बहुत स्नेह था। हर वर्ष भारत यात्रा पर आती थी तो मेरे गांव भी अवश्य जाती थी। 6 अगस्त को पं० वृजलाल जो बख्तावर के घर पर उनके जन्मदिन पर हवन प्रवचन किया। 7 को प्रभाकर आर्यसमाज में प्रवचन किया। 8 को श्री गंगाप्रसाद जी मलहु के घर पर गया। 9 को भी श्री गंगाप्रसाद जी के घर पर रहा फिर उनकी अन्त्येष्टि का कार्य किया। 10 अगस्त को प्रभाकर समाज में स्वामी अग्निवेश जी का व्याख्यान हुआ तथा मुझे भी 30 मिनट बोलने का समय मिला। 11 अगस्त को आसन समाज देनहाक में स्वामो अग्निवेश जी के साथ गया। 12 को आर्यसमाज दोरद्रख्त में बैठक हुई। 13 को भाई श्री कलपु जी के पास पहुंचा। रात्री में यहां पर रुका प्रात: 14 को आसन आर्यसमाज में प्रवचन तथा दयानन्द सभा समाज में प्रवचन के पश्चात् सायंकाल आर्य सभा समाज रोटरडाम में प्रवचन किया। 15 अगस्त का स्वतन्त्रता दिवस दयानन्द सभा समाज देनहाक में मनाया गया। जहां मेरा तथा श्री महेन्द्र स्वरूप जी, पं० आसकिसुन दयाल जी का प्रवचन हुआ। 15 को सायं पं० बलवन्त गौतम जी के यहां पर हिन्दी एवं योग की कक्षा को पढ़ाने के बाद रात्री में वहीं विश्राम किया। 16 अगस्त को श्री जयपाल जो के घर पर तीन दिन का वेद यज्ञ आरम्भ किया। सायंकाल प्रभाकर में योग कक्षा की। 17 अगस्त को दो मोटर गाड़ी रोकने का पूर्वाभ्यास किया। अभ्यास तो पहले से ही था परन्तु वहां की गाड़ियों की ताकत के विषय में अधिक जानकारी नहीं थी सो पूर्वाभ्यास किया गया। 18 को आर्य-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज में प्रवचन किया तत्पश्चात् श्री राजगोपालाचार्य तुकून के छोटे भाई के घर में हवन प्रवचन किया। 21 अगस्त को आर्यसमाज दोरद्रखत में योगासनों एवं शक्तिप्रदर्शन का कार्यक्रम हवन प्रवचन के बाद हुआ। इस प्रदर्शन का प्रचार यहां पर अखबारों एवं रेडियो पर अच्छा किया गया था जिसके कारण से हाल पूरा भर गया। लोगों को स्थान नहीं मिला तो लोग बाहर खड़े रह गये तथा सरकारी अधिकारियों के साथ-साथ स्थानीय लोग काफी मात्रा में थे। दो-दो गाड़ी रोकना, गले से सरिया मोड़ना, थाली फाड़ना, जंजीर तोड़ना इत्यादि सभी कार्य बहुत अच्छे रहे। कार्यक्रम सफल रहा। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग बहन कीर्ति अवतार जी का रहा तथा साथ में पं० विश्वेश्वर जी, पं० जीवन जी, पं० जयपाल जी व तुकून जी का भी विशेष योगदान रहा। यहां पर आर्यवीर दल की भी स्थापना इसी समय की गई। 23 अगस्त को कई कार्यक्रम छोड़कर भाई कलपु जी के साथ बेल्जियम समुद्र के पास स्थित गुफाएं जो पानी के कटाव से बनकर तैयार हैं तथा समुद्र धीरे-धीरे अलग होता गया और बहुत ही खूब सूरत गुफाएं तैयार होगई हैं बड़ा ही रमणीय एवं प्राकृतिक स्थान है। 24 अगस्त को श्री पं० ईश्वरदत्त जी के घर पर हवन किया तथा प्रवचन श्री पण्डित जी का हुआ। 26 अगस्त को श्री कृष्ण जी के यहां पर हवन किया। 27 को आशा बख्शी के घर पर गया वहीं पर विश्राम किया। 28 को श्री अमिचन्द जी के घर पर हवन किया। 30 अगस्त को श्री पं० रामनाथ अयोध्या प्रसाद जी के पास गया। 31 अगस्त को पं० सुखधन जी के समाज में हवन प्रवचन किया। एक सितम्बर को पं० रामनाथ जी अयोध्या प्रसाद के घर पर हवन किया। 3 सितम्बर को पं० श्रीमती चन्द्रकलीसिंह जी के घर पर हवन किया। पं० चन्द्रकलीसिंह जी के यहां पर हवन करने से पूर्व विश्वहिन्दू महासम्मेलन जो देनहाक में 2-3-4 को मनाया जारहा था उसमें मेरा प्रवचन भारत के आर्यसमाज की ओर से प्रतिनिधि के रूप में करवाया। मेरा विषय था हिन्दू धर्म की आधुनिक समस्याएं। जिस पर मैंने दस मिनट का एक लेख पढ़ा। जिसका सभी ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। 4 सितम्बर को श्री पं० भाईलाल जी कुशल के समाज दयानन्द सभा देनहाक में प्रवचन किया। 11 सितम्बर को आर्यसमाज फेकल में योग शक्ति प्रदर्शन हुआ तथा आर्य वीरदल की स्थापना हुई। 12 को पं० बलवन्त के मन्दिर में योग व हिन्दी की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कक्षा करने के पश्चात् रात्री में वहीं पर विश्राम किया। 13 सितम्बर को प्रभाकर समाज में योग की कक्षा की।

15 को श्री राजगोपालाचार्य तुकून के पुत्र का नामकरण संस्कार उनके घर पर किया। 16 को श्री पं० जीवन गणेश जी के पिता के घर पर हवन किया। 17 को पं० बलवन्त गौतम के साथ देनहाक में एक विवाह संस्कार कराया। 18 को प्रातः वैदिक ज्योति संगठन आर्य समाज रोटरडाम में यज्ञ व प्रवचन किया तथा आर्य वीरदल की स्थापना की व नौजवानों को यज्ञोपवीत प्रदान किये। सायंकाल क्राकपान हाल रोटरडाम में प्रभाकर समाज व आर्य सभा समाज द्वारा निश्चित कार्यक्रम में योग व शक्ति प्रदर्शन किया। 19 को पं० बलवन्त गौतम के मन्दिर में योग व हिन्दी कक्षा ली। तथा रात्री में गौतम जी के यहां पर विश्राम किया। 10 को प्रभाकर में योग की तथा पं० सूर्यावती जी के घर भोजन व रात्री विश्राम किया। 25 सितम्बर को आसन आर्यसमाज देनहाक में यज्ञ प्रवचन करने के पश्चात् योग व शक्ति प्रदर्शन किया। देनहाक में हिन्दुओं का बाहुल्य होने के कारण तथा अन्य देनहाक की सभी समाजों का सहयोग होने के कारण यह प्रदर्शन अति सुन्दर व रोचक रहा। इस प्रदर्शन को सफल बनाने में जहां आसन आर्यसमाज के पण्डितों तथा बस्तुर का जो सहयोग था उसके साथ-साथ भाई कलपु जी पं० सुखराज जी माता यति जी आदि अन्य कई शुभचिन्तकों का सहयोग भी सराहनीय था। इसी प्रदर्शन से पूर्व आसन आर्यसमाज में आर्य वीरदल की स्थापना की गई। 26 को पं० बलवन्त गोतम के मन्दिर में पढ़ाने जाने से पूर्व श्री तुकून जी सैफकाम की पुत्री का नामकरण संस्कार किया। 27 को प्रभाकर समाज में योग की कक्षा की तथा रात्री को भाई कलपु जी के घर पर देनहाक में विश्राम किया। एक अक्तूबर को आर्य समाज लेवार्ड में यज्ञ प्रवचन तथा योग शक्ति प्रदर्शन किया। यहां पर ही भाई अजय हिमाचल आन्ध्र के कई भाई इकट्ठे होकर मिलने आये उन्हें अखबार द्वारा यह सूचना मिली कि भारत (हरियाणा) से कोई नौजवान आया है तो जरूर मिलेंगे, कार्यक्रम देखेंगे। मिलकर बहुत खुश हुए। तथा कार्यक्रम देखने के पश्चात् तो अत्यन्त प्रसन्न हुए। यहां पर भी आर्यवीर दल की स्थापना की गई।

2 अक्तूबर को प्रभाकर आर्यसमाज में प्रवचन के पश्चात्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज एक विशेष कार्यक्रम माता सुमंगलायति जी तथा भाई गंगा प्रशाद जी कलपु द्वारा देनहाक पद यात्रा का रखा हुआ था।

भाई कलपु जी आदि देनहाक के सभी कार्यकर्ता इस यात्रा को सफल बनाने में लगे हुए थे। रोटरडाम से पं० जीवन जी, पं० विश्वेश्वर जी, पं० जयपाल जी, पं० तुकून जी आदि के साथ मैं भी देनहाक में यात्रा आरम्भ स्थल पर पहुंच गया। इस यात्रा का उद्देश्य था भारत में धर्म के नाम पर जो स्त्रियों को जलाया जा रहा है तथा हरिजनों को मन्दिरों में प्रवेश निषेध इत्यादि जो गलत मान्यताएं हिन्दू धर्म के ठेकेदार मनमानी बनाकर धर्म की आड़ में भारतीय सभ्यता का ह्रास कर रहे हैं। हम सब हालैण्ड के निवासी इस पद यात्रा के द्वारा भारतीय दूतावास से यह मांग करते हैं कि हमारी यह आवाज आप भारत सरकार तक पहुंचाएं कि हम मांग करते हैं ऐसा धर्म के नाम पर नहीं होना चाहिए। इन रूढ़िवादी गलत मान्यताओं पर सरकार की ओर से प्रतिबन्ध होना चाहिए ऐसा एक मांग पत्र पद यात्रा करते हुए भारतीय दूतावास तक जाकर दूतावास अधिकारी को पेश किया। यह कार्यक्रम अपने ढंग का अद्भुत कार्यक्रम रहा। अनेक गली व बाजारों से पदयात्रा जब जयघोष करती हुई आगे बढ़ रही थी तो जनता देखने के लिए उमड़ पड़ती थी। इस यात्रा को पूर्ण रूप से सफल बनाने के लिए माता सुमगंलायति जी व भाई कलपु जी का विशेष योगदान रहा।

6 को मैं ट्रेन के द्वारा श्री पं० ऋषि तिवारी जी के पास आपके घर पर अमस्टरडाम गया। एक रात पं० जी के पास रहा। 8 अक्तूबर को आर्यसमाज एन्सकदई में हवन प्रवचन के पश्चात् योग का प्रदर्शन किया तथा आर्यवीर दल की स्थापना की। यह स्थान जर्मन से लगता हुआ हालैण्ड की सीमा पर है। यहां पर हवन प्रवचन व प्रदर्शन देखने के लिए कालेज के स्थानीय छात्र भारी मात्रा में उपस्थित थे। 9 को प्रातः बहन विद्या जी की पुत्री का मुण्डन संस्कार किया तथा सायंकाल आर्यसमाज से विदाई समारोह हुआ। जिससे आर्य सभा की ओर से मेरा सम्मान किया गया तथा आगे भी आने के लिए प्रार्थना की गई। अब वापिस भारत आने का समय पास आ रहा था अतः कुछ खरीदने आदि में भी समय लगाया तथा मिलने जुलने में अधिक समय लगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्टूबर को प्रभाकर समाज में प्रात:काल विदाई समारोह हुआ। जो कि एक बड़े सम्मेलन का रूप धारण कर रहा था। तथा सायंकाल आर्यसमाज से विदाई का कार्यक्रम हुआ। जैसे-जैसे जाने की निश्चित तिथि पास में आरही थी उसी प्रकार से व्यस्तता ज्यादा बढ़ रही थी। अक्तूबर को आर्यसमाज में बहन कीर्ति अवतार जी के जन्म दिन पर विशेष हवन प्रवचन के पश्चात् सभी से विदाई ली।

20 अक्तूबर को पं० विश्वेश्वर जी के घर पर अपार भीड़ आने जाने वालों की लगी हुई थी। क्योंकि आज मुझे वापिस भारत जाना था। अतः लोग मिलने के लिए आ रहे थे। पं० जीवन जी वानप्रस्थी जी, श्री पं० आर किसून दयाल जी, पं० भाईलाल जी कुशल, पं० देवानन्द जी आदि अनेक मित्र एवं शुभचिन्तक मिलने आये। अब समय वह घर छोड़ने का भी आगया जिसमें लगभग चार मास से मैं रह रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे सालों से यहीं पर रह रहा हूं। भाई तुकुन जी, पं० विश्वेश्वर जो पं० जीवन जी, पं० जयपाल जी, आशा बख्शी विद्या जी आदि अनेक आर्य सज्जनों सहित मैंने एयर पोर्ट के लिए घर से विदाई ली।

विदाई समारोह

पं० विश्वेश्वर जी के घर पर 4 मास से मैं इस प्रकार से रह रहा था मानो जैसे यहां पर कई वर्षों से रह रहा हूं। 4 मास की इस अवधि में मैंनें अपने सामर्थ्यानुसार प्रचार कार्य किया। प्रचार कार्य में अनेक लोगों से परिचय हुआ। जैसे-जैसे लोगों को पता चला कि मैं वापिस भारत जा रहा हूं, वैसे-वैसे लोगों में मिलने के लिए उत्सुकता बढ़ती गई। कोई घर पर आकर मिलता तो कोई टेलीफोन पर बात-चीत कर अपना स्नेह दर्शाता। विदाई का सबसे पहला कार्यक्रम 9 अक्तूबर को श्री पं० जयपाल जी की अध्यक्षता में आर्य सभा समाज रोटरडाम में हुआ।

हवन प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् सभा समाज के अधिकारियों एवं पण्डित पण्डिताओं ने मुझे स्नेहयुक्त सम्मान दिया। मैंने भी सभी का धन्यवाद किया तथा समाज के निवेदन पर पुनः आने का वचन दिया। 16 अक्तूबर को पं० रामावतार जी की अध्यक्षता व पं० विश्वेश्वर जी के संयोजकत्व में प्रभाकर आर्यसमाज रोटरडाम में कार्यक्रम हुआ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैसे तो सभी समाज अपने-अपने यहां पर विदाई का कार्यक्रम कर रहे थे परन्तु विशेष विदाई समारोह प्रभाकर समाज में हुआ। इसके लिए पं० विश्वेश्वर जी नें सभी को निमन्त्रण पत्र भेजें हुए थे। जिसके फलस्वरूप यहां पर विदाई के समय देनहाक, अमस्टरडाम फैकल आदि सभी समाजों से लोग विदाई देनें के लिए आयें हुए थे। पं० सन्तोखी जी देनहाक, पं० राजाचन्द्रहास तुकून जी फैकल, श्री नारायण जी दोदा, पं० जयपाल जी, पं० बख्तात जी आदि रोटरडाम के सभी पण्डित एवं समाजों के अधिकारी वर्ग आये हुए थे। पं० जीवन गणेश जी, भाई गंगाप्रसाद जी कलपु, पं० तुकून जी आदि अन्य और सभो वक्ताओं ने मुझे धन्यवाद दिया तथा निवेदन किया कि आगे भो इसो तरह प्रचार कार्य में आते रहे।

जिस समय सभी वक्ता मुझे लक्ष्य करके प्रशंसा कर रहे थे तो मुझे यह महसूस हो रहा था कि यह सब विदाई समारोह नहीं होना चाहिए था। अच्छा यही था कि चुपचाप वापिस चला जाता। परन्तु यह सव निर्णय करने पर अच्छा नहीं था। आर्यवीर दल के सभापति श्री राजगोपालाचार्य तुकून जी सहित सभी आर्य वीर दल के सदस्यों का भी यह मत था कि आप अगले वर्ष फिर अवश्य ही आना। विदाई समारोह के पश्चात् श्रीमती पण्डिता चन्द्रदेवी विश्वेश्वर जी सभी के लिए खाना तैयार करके लाई थी सो सभी ने भरपेट खाया। इसके बाद सायंकाल आर्यसमाज में भी श्रीमती पण्डिता चन्द्रकलिसिंह जी की अध्यक्षता व कीर्ति अवतार की देख-रेख में विदाई कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

श्रीमती रामवरण जी ने भजन द्वारा स्वागत किया व अन्य पण्डितों नें भी शुभकामना प्रदान की तथा मैंने भी धन्यवाद सहित सबको भारत आनें के लिए आमन्त्रित किया।

—:०:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नम्र विवेदन

मैंने अपनी जानकारी एवं कुछ अन्य परिचित जनों के सहयोग से आर्यसमाजों के विषय में लिखनें का प्रयास किया है। आर्यससाजों का सामाण्य परिचय दिया गया है। होलैण्ड में अनेक आर्यसमाजें और भी होंगी जिनका मैं परिचय नहीं लिख सका हूं। जिन समाजों का परिचय नहीं है उनसे मेरा निवेदन है कि वे अपना परिचय भी देवें। जिसे कि फिर कभी प्रकाशित किया जा सके।

जिनका इसमें परिचय है यदि उसमें अज्ञानतावश कोई त्रुटि हो गई हो उसकी भी सूचना दें, जिससे कि आगामी संस्करण में ठीक कर सकें।

रामपाल शास्त्री
वेद विद्यालय, 119 गोतमनगर,
नई दिल्ली-49

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसन आर्यसमाज होलैण्ड

यह समाज देनहाक शहर में है। यहां पर हिन्दुओं की संख्या सर्वाधिक होने से इस समाज का महत्त्व अधिक है। होलैण्ड का सबसे पहला एवं सबसे विशाल समाज होनें का गौरव इसे प्राप्त है। इस समाज में बाहर से आनेवाले अतिथियों के रहने आदि की उत्तम व्यवस्था है।

आर्यसमाज के विशेष कार्यक्रमों के लिए सुविधाजनक एवं विशाल है। होलैण्ड में पहला समाज होने के कारण इस समाज नें अनेक उतार-चढ़ाव देखे। इस उतार-चढ़ाव को पीछे छोड़ता हुआ सदा चरैवेति-चरैवेति का मार्ग अपनाकर यह समाज आगे ही बढ़ता गया है।

आर्यसमाज के अतिरिक्त अन्य हिन्दुओं का कोई कार्यक्रम होता है तो व्यवस्था के लिए भी यह समाज उपयोगी तथा सहयोगी है। इस समाज में समय-समय पर वैदिक विद्वानों के प्रवचन एवं साप्ताहिक सत्संग होता है।

इस समाज में हिन्दी पढ़ाने के उद्देश्य से पाठशाला की व्यवस्था है। यहां पर बच्चों के साथ-साथ अन्य हिन्दी प्रेमियों के लिए भी यह सुविधा प्राप्त है।

इस कार्य में श्री सन्तोखी जी, श्री राम तहलसिंह जी, श्री झरप जी, श्री बृजमोहन जी व श्री माताई जी का विशेष सहयोग मिलता है।

आसन समाज का पण्डित वर्ग भी होलैण्ड में अपना विशेष स्थान रखता है। आसन समाज का पण्डित वर्ग—

सर्वश्री पं० सन्तोखी जी, पं० अलगू जी, पं० भगवानदीन जी, पं० रातादीन जी, पं० द्वारका जी, पं० जयपाल जी।

समाज के पदाधिकारी

सभापति	—श्री देवकलसिंह जी
उपसभापति	—श्री रामतहलसिंह जी
मन्त्री	—श्री सन्तोखी जी
उपमन्त्री	—श्री भगवानदीन जी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोषाध्यक्ष —श्री झगरू जी
सहायक —श्री मंगरे जी
—श्री अलगू जी
—श्री रामेसर जी

इस समाज का अपना त्रैमासिक "आसन सन्देश" नामक समाचार पत्र निकलता है, जिसका उद्देश्य हिन्दी एवं डच भाषा द्वारा आर्य संस्कृति का ज्ञान प्रदान करना है। इस पत्रिका के माध्यम से यह समाज प्रायः होलैण्ड के सभी शहरों में वैदिक संस्कृति का प्रचार करता है।

आसन सन्देश का परिवार

प्रधान सम्पादक —एम. शिवगोविन्द जी
सह सम्पादक —श्री सुखराज जी
—श्री गुरविन जी
—श्री रामतहलसिंह जी

होलैण्ड में वैदिक संस्कृति का प्रचार प्रसार करने में यह पत्रिका एवं आसन आर्यसमाज महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

प्रभाकर आर्यसमाज रोटरडाम

देनहाक की भांति रोटरडाम में भी अनेक आर्यसमाजें कार्य कर रही हैं उनमें प्रभाकर आर्यसमाज विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

प्रारम्भ में यह समाज क्राकपान हाल में अपना साप्ताहिक सत्संग करता था परन्तु इस समय प्रभाकर आर्यसमाज के पास चार मंजिला अपना मन्दिर है। यहां साप्ताहित सत्संग के साथ-साथ हिन्दी एवं संगीत की पाठशाला चलती है तथा आर्य वीर दल की शाखा नियमित कार्य करती है। समाज मन्दिर बनाने में पं० रामदेव रामावतार जी, श्री गंगाप्रसाद जी मलहू, श्री रामखिलावन जी तथा पं० जीवन गणेश जी इत्यादि अनेक आर्यजनों का परिश्रम है। प्रभाकर समाज का विशाल भवन जिसमें सप्ताह में दो दिन हिन्दी पाठशाला चलती है जिनमें श्री पं० जीवन गणेश जी, श्री पं० हरि विश्वेश्वर जी, पं० रामदेव रामावतार व भाई राजगोपालाचार्य तुकून आदि पण्डित पढ़ाते हैं। पं० जीवन गणेश जी के सांनिध्य में सपताह में दो दिन संगीत की कक्षा चलती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज के सभापति श्री राम खिलावन जी तथा उपसभापति श्री गंगाप्रसाद जी मलहू तथा रामदेव रामावतार हैं। पं० जीवन गणेश जी मन्त्री पद पर कार्यरत हैं। उपमन्त्री का कार्यभार श्री पं० हरि विश्वेश्वर जी देखते हैं। श्री हरिहर बहादुर जी व श्री रामलाल जी कोषाध्यक्ष का कार्य करते हैं।



रामपाल शास्त्री, पं० जीवन गणेश जी, पं० हरि विश्वेश्वर जी, श्री हरि बहादुर जी व रामलाल जी।

श्री दयानन्द मजेश, श्री ऋषि मलहू व श्री लछमनसिंह जो व्यवस्थापक हैं। समाज के सदस्यों की संख्या 250 से ऊपर है।

होलैण्ड में यह समाज प्रमुख समाजों में है। समय-समय पर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

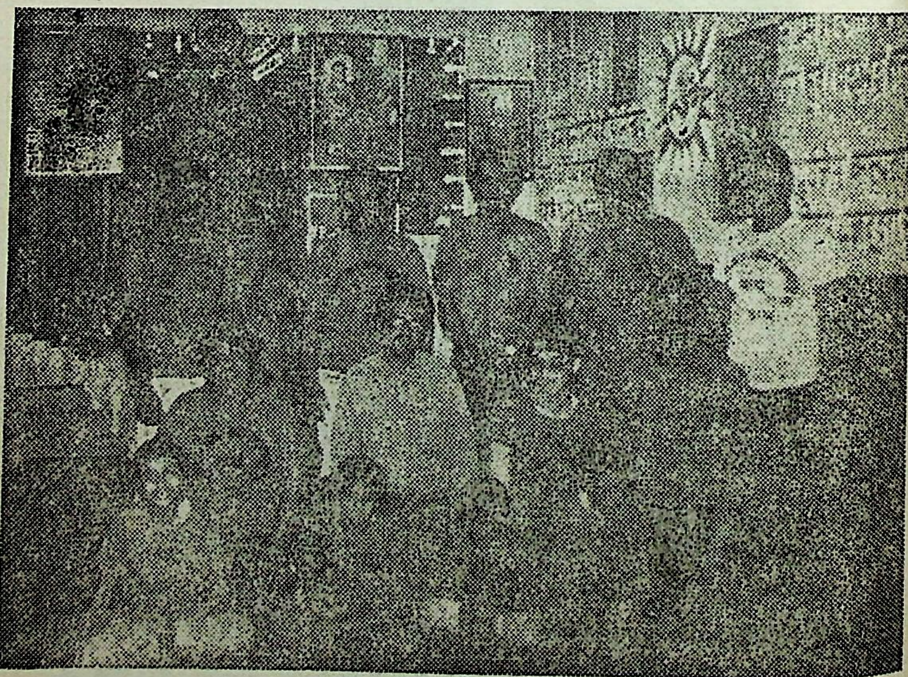
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत व सूरीनाम से विद्वानों को यह समाज आमन्त्रित करता रहता है।

इस समय समाज के सभापति श्री पं० जीवन गणेश जी व मन्त्री पं० हरि विश्वेश्वर जी हैं।

प्रभाकर आर्यसमाज में आर्य वीर दल का मुख्य केन्द्र है। आर्य वीर दल के सभापति श्री राजगोपालाचार्य तुक्रन समस्त होलैण्ड में आर्य वीर दल के कार्यों को देखते हुए प्रभाकर आर्यसमाज के सभी कार्यों में भाग लेते थे। आर्य वीर दल सभी अधिकारियों को एवं आर्य वीरों को श्री पं० उषर्बुध जी ने प्रभाकर आर्यसमाज में लगे योग शिविर के समापन पर प्रमाण पत्र एवं पारितोषिक प्रदान किये।

इस समय आर्य वीरदल के कार्य को श्री पं० राजगोपालाचार्य तुक्रन जी, श्री राजेश जी व विजय नरेन्द्र आदि नवयुवक देखते हैं।



प्रभाकर आर्य वीर दल के आर्य वीरों के साथ रामपाल शास्त्री

आर्य सभा समाज रोटरदाम

रोटरदाम में स्थापित आर्यसमाजों में आर्य सभा समाज की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थापना 1976 में हुई थी। उस दिन समाज के पास अपना निजी भवन नहीं था। तत्कालीन समय में समाज के प्रमुख अधिकारी श्रीमान् बी नारायण जी व पं० कल्लु जी होते थे। आपने समाज को आगे बढ़ाने में भरपूर सहयोग किया। इस समय आप दोनों का स्वर्गवास हो गया है।

श्रीमान् बी नारायण जी पं० कुल्लु जी के निधन के पश्चात् समाज को भारी आघात पहुंचा। परन्तु तत्कालीन कार्यकर्त्ताओं ने कार्य को आगे बढ़ाया।

इस समय समाज के पास आपना चार मंजिला विशाल भवन है। प्रत्येक सप्ताह रविवार को सत्संग के माध्यम से हवन व प्रवचन का कार्यक्रम होता है। सप्ताह में दो दिन हिन्दी पाठशाला लगती है जिसमें 65 बच्चे हिन्दी सीखने के लिए आते हैं। समाज पहले सरकार द्वारा दिये गये स्थान पर चलता था जिसमें सत्संग एवं हिन्दी पाठशाला भी चलती थी। परन्तु आप सबने मिलकर एक विशाल भवन खरीदा है। जिसमें इस समय आर्य समाज का कार्य चलता है।

वर्तमान में सभा के सभापति श्री विष्णुप्रसाद जयपाल जी सभी सहयोगियों के साथ मिलकर इस समाज को आगे बढ़ाने में लग्न से लगे हुए हैं।

इस समाज में जहां पण्डित वर्ग कार्य में लगे हुए हैं वहां पण्डिता वर्ग भी पीछे नहीं है। चाहे वह पढ़ाने का कार्यक्रम हो अथवा प्रवचन आदि का कार्यक्रम हो।

समाज में इस समय निम्नलिखित अधिकारी कार्य कर रहे हैं।

सभापति	—श्री विष्णुप्रसाद जी।
मन्त्री	—हरि नरवर जी।
उपसभापति	—विश्वनाथ दोदा जी।
उपमन्त्री	—बृजलाल जी बख्तावर।
कोषाध्यक्ष	—चन्द्रकली बदलु जी।
	श्री सहदेव दोदा जी।
	भगवानप्रसाद भजन।

इस समाज में महिला आर्यसमाज भी स्थापित है। महिला पण्डित वर्ग में श्रीमती पं० चन्द्रकलो बदलु जी पं० चन्द्रकली सिंह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शनिचर कारलो आप सब हवन प्रवचन के कार्यक्रम के साथ-साथ हिन्दी पाठशाला में बच्चों को पढ़ाती भी हैं। आर्यसमाज में आर्य वीर दल भी अच्छी प्रकार अपना कार्य कर रहा है।



आर्य सभा समाज रोटरडैम के अधिकारियों के साथ रामपाल शास्त्री

समाज के सभापति सहित सभी का आर्यवीरों को प्रोत्साहन मिलता है।

आर्य वीर दल के अधिकारी

दलसभापति —रघुनाथ रामानन्द चौथी।
शाखानायक —आनन्दकुमार देवानन्द।
उपशाखानायक —महेन्द्र प्रसाद।
गंगा प्रसाद।

आर्यसमाज वैदिक ज्योति संगठन रोटरडाम

आर्यसमाज वैदिक ज्योति संगठन रोटरडैम की स्थापना 30 मार्च 1988 में श्री नारायणदत्त जी दोदा एवं श्री इन्द्रजीत जी बख्तावर के परिश्रम से हुई है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व आप लोग घरों में साप्ताहिक सत्संगों के द्वारा प्रचार करते थे।

आप सबका कार्यक्षेत्र बढ़ने के कारण समाज की स्थापना करके प्रचार-प्रसार प्रारम्भ किया।

26 अगस्त को आर्यसमाज की स्थापना के 5 मास पश्चात् आपको सरकार की ओर से समाज के लिए स्थान प्राप्त हुआ।

समाज में प्रति सप्ताह सत्संग के साथ-साथ हिन्दी पाठशाला भी चलती है। जिसमें 30 से 35 छात्र हिन्दी सीखने आते हैं। हिन्दी पाठशाला के साथ-साथ संगीत की शिक्षा भी बच्चों को सिखाई जाती है।

समाज के सभी अधिकारी वर्ग एवं पण्डित वर्ग मिलकर अच्छी प्रकार से कार्य करते हैं।



श्री नारायण दोदा जी, श्री इन्द्र बख्तावर जी, रामपाल शास्त्री व श्री बृजलाल बख्तावर जी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज के अधिकारी

सभापति —श्री इन्द्रजीत जी बख्तावर
मन्त्री —श्री नारायण दोदा जी
कोषाध्यक्ष —विजय कुमार
सहायक —श्री विष्णुदत्त जी दुखारन
राजेन्द्र कुमार धर्मपाल
रवीन मोहन
प्रेमचन्द बख्तावर
पं० बख्तावर जी

इस समाज में आर्य वीरदल की स्थापना मेरे द्वारा की गई। जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी नियुक्त किए गए।

शाखानायक —विजयकुमार धर्मपाल जी
उपशाखानायक —श्रवणकुमार दोदा जी
चन्द्रशेखर जी

समाज इस समय प्रगति पर है। पाठशाला में छात्रों की संख्या भी बढ़ रही है।

आर्यसमाज दयानन्द सभा होलैण्ड

1983 में अजमेर नगर के अन्दर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के निर्वाण दिवस पर एक विशाल समारोह हुआ। जिसमें देश विदेश के लाखों आर्यजनों ने स्वामी जी के प्रति अपनी श्रद्धा रखी। अजमेर के निर्वाण शताब्दी के पश्चात् निर्वाण शताब्दी का एक कार्यक्रम स्वामी इन्द्रवेश जी, स्वामी अग्निवेश जी के सांनिध्य में देश की राजधानी दिल्ली में भी हुआ। यहां पर भी देश विदेश से हजारों आर्यों ने ऋषि के प्रति अपनी श्रद्धा सुमन भेंट की।

श्री पं० भाईलाल कुशल जो अनेक आर्यजनों के साथ होलैण्ड से इस समारोह में अजमेर के बाद यहां पर उपस्थित हुए। पं० भाईलाल कुशल ने यहां पर एक निश्चय किया कि मैं होलैण्ड में जाकर एक आर्यसमाज की स्थापना करूंगा। स्वामी इन्द्रवेश जी के परामर्श के बाद आर्यसमाज देनहाक नाम से एक आर्यसमाज की स्थापना की।

यह समाज पारिवारिक सत्संगों से प्रारम्भ होकर 1985 में एक विशाल रूप धारण कर गया तथा सरकार से (हाल) स्थान भी प्राप्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया। जिसमें अब सत्संग आदि विशेष कार्यक्रम में कोई कठिनाई नहीं होती।

सरकार के हाल (स्थान) प्राप्त हो जानें के बाद इस समाज का नाम आर्यसमाज दयानन्द सभा होलैण्ड रखा गया जो कि आज तक कार्यरत है।

समाज में प्रति सप्ताह सत्संगों के साथ-साथ अनेंक विशेष कार्यक्रम भी होते हैं।

जैसे—जन्मदिन, मुण्डन, यज्ञोपवीत, नामकरण इत्यादि संस्कार। समाज में इस समय श्री पं० भाईलाल कुशल जी नें अपने परिश्रम से दो पण्डित और एक पण्डिता भी तैयार की है। समाज सभी अधिकारी वर्ग एवं पण्डित वर्ग परस्पर सहयोग से समाज के कार्यों को आगे बढ़ाने में लगे हुए हैं। मेरे भी यहां पर कई कार्यक्रम हुए। श्री पं० आर किशन दयाल जी व श्री महेन्द्र जी का परिचय हुआ।

आपका भी श्री भाईलाल जी को पूर्ण सहयोग मिलता रहता है। देनहाक शहर में ये आर्यसमाज दिनों दिन प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

यहां पर आर्यवीर दल की स्थापना भी मेरे (लेखक) द्वारा हुई। आर्यवीर दल का कार्यक्रम आनन्द रामकिशन की देखरेख में होता है और ये आर्यवीर दल दयानन्द सभा हालैण्ड के शाखानायक पद पर कार्य कर रहे हैं।

सभा के अधिकारी गण—

पं० भाईलाल कुशल	—सभापति
श्रीमान् लालता अयोध्याप्रासद	—उपसभापति
उर्मिला शिवनाथ	—मन्त्री
श्रीमान् देवप्रकाश बघाई	—उपमन्त्री
अरविन रघुबार	—कोषाध्यक्ष
आनन्द रामकिशन	—पुस्तकालयाध्यक्ष
श्रीमान् भगवानप्रसाद बुहु	—व्यवस्थापक

समाज का पण्डित वर्ग—

पं० भाईलाल कुशल जी।

पं० सुरेन्द्रकुमार कुशल राजन।

पण्डिता पारवति बिन्द्रावन।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यवीर दल दयानन्द सभा के अधिकारी वर्ग–

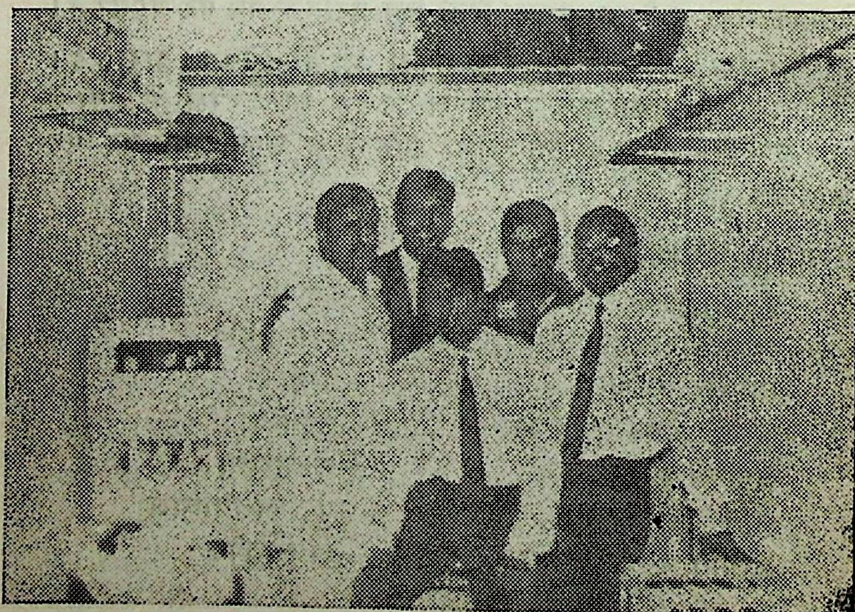
संरक्षक —श्री पं० आर किशन दयाल।
शाखानयक —आनन्द रामकिशन।
उपशाखानायक —सुरेन्द्र कुमार कुशल।

आर्यसमाज दोरद्रखत

श्रीमती पण्डिता चन्द्रकलीसिंह जी के सभापतित्व में यह समाज अपनें मिशन में पूर्णरूप से सफल होरहा है। सरकार द्वारा प्रदत्त हाल में आर्यसमाज के कार्यक्रम होते हैं। साप्ताहिक सत्संग के साथ-साथ यहां पर पं० हरि विश्वेश्वर जी के देखरेख में हिन्दी पाठशाला भी चलती है।

समाज के मन्त्री पद पर बहन कीर्ति अवतार जी कार्य कर रही हैं। आपके पुरुषार्थ से ही यह समाज उन्नति के पथ पर अग्रसर है।

समाज में हिंदुओं के अतिरिक्त स्थानीय जन भी बहन कीर्ति अवतार में प्रभाव के कारण अच्छे उपस्थित होते हैं।



आर्यवीर दल दोरद्रखत के अधिकारी

हिन्दी पाठशाला का सभी कार्यभार पं० हरि विश्वेश्वर जी देखते हैं। समाज में नवयुवकों की उपस्थिति सराहनीय है। यहां 21 अगस्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1988 को आर्यवीर दल की स्थापना की गई। जिसमें श्री अनिल हेमन्त जी सूरत जी व श्याम जी अधिकारी नियुक्त किये गये हैं।

आर्य सभा समाज एन्सकदेई

आर्यसभा एन्सकदेई समाज सरकार द्वारा प्रदत्त हाल में अपना साप्ताहिक सत्संग करता है। समाज के सभी अधिकारी (बस्तूर) मिल जुलकर कार्य करते हुए समाज की उन्नति में अग्रसर है।

इस समाज में मैंने 4 अक्तूबर को आर्यवीर दल की स्थापना की। यहां पर छात्रों (नौजवानों) की संख्या समाज में अच्छी है। समाज दिन-प्रतिदिन उन्नति के शिखर पर जा रहा है। एन्सकदेई शहर में हिन्दू कम होते हुए भी समाज की सदस्यता अच्छी मात्रा में है।

आर्यसमाज लेबार्दन

यह आर्यसमाज पं० जीवन गणेश जी के सांनिध्य में अच्छा कार्य कर रहा है। समाज के पास अपना मकान अभी नहीं है। समाज को सरकारी एस. ए. सेन्त्रम हाल प्राप्त है जिसमें साप्ताहिक सत्संग हवन प्रवचन होता है।

सप्ताह में दो दिन इस समाज में हिन्दी एवं संगीत की पाठशाला चलती है। जो की पं० जीवन गणेश जी ही चलाते हैं। यहां की पाठशाला में अधिक संख्या नवयुवकों एवं महिलाओं की होती है।

एक अक्तूबर को यहां पर आर्य वीर दल की स्थापना की गई है।

आर्यवीर दल भी अच्छा कार्य कर रहा है।

आर्यसमाज फैकल

आर्यसमाज फैकल श्री पं० राजा चन्द्र हास जी तुकून के सभापतित्व में कार्य कर रहा है। अभी समाज के पास अपना मकान नहीं है। परन्तु सरकार द्वारा दिये गये एक हाल में समाज का कार्य होता है।

प्रत्येक सप्ताह हवन प्रवचन के द्वारा सत्संग का कार्यक्रम होता है तथा हिन्दी पाठशाला भी चलती है।

फैकल में हिन्दुओं की आबादी कम होते हुए भी यह समाज अच्छा कार्य कर रहा है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज के पदाधिकारी

सभापति—श्री राजा चन्द्र हास जी तुकून।
मन्त्री—श्री हरिप्रसाद शुद्ध जी।
उपमन्त्री—रवीनभानसिंह जी।
कोषाध्यक्ष—श्री नजीर जी।

राजेन्द्र प्रसाद तुकून। 11 सितम्बर को आर्य वीर दल की स्थापना की गई। जिसमें निम्नलिखित अधिकारी चुने गए।

शाखानायक—राजेन्द्र प्रसाद तुकून।
उप शाखानायक—रामदत्त।

इसके साथ-साथ सुनील जयकुमार विनोद, राजेश किशन आदि भी नवयुवक इस दल में सम्मिलित किये गये हैं।

गरीब अनाथ बच्चों का समाज

इस समाज की स्थापना श्री पं० देवनारायण सुखधन जी ने की है। आप एक सच्चे आर्य धार्मिक व्यक्ति है। आपने इस समाज की स्थापना गरीब अनाथ की सहायतार्थ की है। आप इस समाज के द्वारा अनेक स्थानों पर सहायता करते हैं। हर वर्ष भारत में हजारों रुपये के कपड़े भेजते हैं। तथा जब-जब भी कोई आकस्मिक विपदा कहीं पर आती है तो आप भरपूर सहायता भेजते हैं। आपके इस कार्य में आपका परिवार पुत्र एवं अन्य भी भाई बन्धु वर्ग पूर्ण रूप से सहयोग करते हैं। समाज हवन प्रवचन का कार्य भी सुचारु रूप से होता है। हालैण्ड में भी सभी समाजों को समय-समय पर सहायता करते रहते हैं। भारत में सार्वदेशिक सभा तथा आगरा में दयानन्द शिशु मन्दिर में तो आप हर वर्ष सहायता भेजते हैं।

जन अधिकारी सेवा संघ

जन अधिकार सेवा संघ की स्थापना 1988 में हुई। इसका मुख्य उद्देश्य है। जहां कहीं पर मानव जाती पर चाहे वह धम के नाम पर अथवा जाति पर तथा रंग रूप के नाम पर अत्याचार पक्षपात हो रहा है।

उसके विषय में आवाज उठाकर उसके खिलाफ लड़ाई लड़ना। इसकी स्थापना के मुख्य कर्ता अर्थात् इस संघ की स्थापना के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्ता श्रीमती माता सूयमलायती जी संन्यासिनी तथा श्री भाई गंगा-प्रसाद जी कुलपु हैं, परन्तु आपको हॉलैण्ड की प्रमुख आर्यसमाजों का सहयोग भरपूर मात्रा में प्राप्त है।

इस संघ के तत्त्वाधान में 22 अक्तूबर, 1988 को देनहाक के अन्दर एक पदयात्रा का आयोजन किया गया। जिसने कि भारत के दूतावास अधिकारी को जाकर ज्ञापन दिया तथा मांग करते हैं कि भारत के अन्दर जो सतीप्रथा, हरिजनों को मन्दिर में प्रवेश निषिद्ध है। इस प्रकार का गलत काम नहीं होना चाहिए। मैं स्वयं भी इस पद-यात्रा में सम्मिलित था। माता सुगलायती की अध्यक्षता में 150 के लगभग लोग अपने-अपने हाथों में अनेक बैनर उठाए तथा अपने पक्ष में जयघोष करते हुए। आगे बढ़ रहे थे। जो दृश्य देखने लायक था। प्रारम्भ में जहां हम संख्या में कम थे। वहां दूतावास पहुंचते हमारी संख्या कई गुना बढ़ गई तथा सब और अति उत्साह का माहौल बन गया। पुलीस भी घबरा गई कि अचानक इतनी संख्या कैसे हो गई। परन्तु जब कार्य शान्ति से सम्पन्न हुआ तो पुलीस अधिकारी वर्ग बड़ा प्रसन्न हुआ।

दूतावास पर पदयात्रा नें एक सभा का रूप धारण किया। जिसकी अध्यक्षता माता सुगलायति जी तथा संयोजक श्री गंगाप्रसाद कलपु ने किया। यहां पर सबने यह प्रस्ताव पास किया कि धरती के किसी भी कौन पर अगर किसी जाति के साथ अन्याय व अत्याचार हुआ तो हम उसके खिलाफ अवश्य ही लड़ाई लड़ेंगे। अन्त में श्री भाई कलपु जी ने सभा को धन्यवाद दिया जो कि अनेक बड़े संगठन इसमें सम्मिलित थे। तथा अपने अनेक आर्यसमाज भी भाग ले रहे थे। जंसे प्रभाकर समाज रोटरदाम आसन समाज देनहाग आर्यसमाज आदि सभी का धन्यवाद किया। तथा माता यति जी द्वारा मांग पत्र तत्कालीन दूतावास अधिकारी को प्रदान करके सभा विसर्जित हुई।

हिंदू धर्म शोध संगठन

जिस प्रकार से भारत के अन्दर आर्यसमाज नेता कार्यकर्त्ता ही नहीं अपितु समस्त आर्यजन इस बात को लेकर चिन्तित है क्या भावी पीढ़ी हमारे अधूरे कार्य को आगे बढ़ायेगी। अर्थात् यह बात सबको

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोचने के लिए मजबूर कर रही है कि आज का नवयुवक वर्ग धर्म के प्रति लगाव क्यों नहीं।

ठीक उसी तरह हॉलैण्ड के भी आर्यजनों नें इस पर विचार किया और वे इस निष्कर्ष पर निकले कि हम अपने बच्चों को डच भाषा के माध्यम से वैदिक धर्म का ज्ञान करायें।

इस पर कुछ व्यक्तियों का अन्य विचार भी था कि उन्हें हिंदी भाषा ही के द्वारा उपदेश व ज्ञान प्राप्त कराया जाए परन्तु यहां के वातावरण में यह असम्भव तो नहीं लेकिन कठिन अवश्य हैं।

वर्तमान में नवयुवक अपने धर्म व संस्कृति के प्रति रुचि रखे इसलिए यथा समय परिस्थिति वश वातावरणानुकूल एक संगठन की स्थापना की गईं जिसका नाम रखा गया "हिंदू धर्म शोध संगठन"।

वैसे इस प्रकार का एक संगठन बनें ऐसा—विचार एकता भवन देनहाक में भी एक बार किया गया था। परन्तु आगे उस पर कोई कार्य न हुआ।

श्री गंगाप्रसाद जी कलपु एवं इनके दो और मित्रों नें मिलकर इस संगठन की स्थापना की। जिसका उद्देश्य है कि डच भाषा के माध्यम से वैदिक संस्कृति व सभ्यता का प्रचार व प्रसार करना तथा हिंदू धर्म से इतर नीतियों में भी उन्हीं की भाषा के माध्यम से अपनी वैदिक संस्कृति का प्रचार करना।

हिंदू धर्म शोध संगठन समय-समय पर वैदिक विद्वानों का विशेष प्रवचन एवं छोटी-छोटी पुस्तकें वैदिक संस्कृति एवं आर्य सभ्यता के सम्बन्ध में डच भाषा में छपवाकर बांटता है।

प्रारम्भ में इस संगठन में श्री कलपु जी श्री हरिरामवरण जी व श्री जयप्रसाद सुखराज जी ही थे। परन्तु जैसे-जैसे इस संगठन का कार्य बढ़ता गया तथा लोग इसकी महता को समझने लगे। वैसे-वैसे बहुत से लोगों का इन्हें सहयोग भी मिलने लगा।

जब इस संगठन का कार्य अधिक बढ़नें लगा तो इसमें आप लोगों ने तीन सदस्यों को अपने साथ लेकर कार्य आगे बढ़ाया। नए सदस्य हैं—

श्री प्रेमचन्द जी।
स्वामी विहारी।
पण्डित दातादीन जी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार से यह संगठन अपने कार्य में संलग्न है। इस संगठन नें अब तक चार पुस्तकें डच भाषा में छपवाकर जनता में वितरित की जो इस प्रकार से हैं।

(1) सोलह संस्कार।
(2) आर्यसमाज जन्म विकास।
(3) आपके रास्ते में हिंदू भाई भी रहते हैं।
(4) होली और फगुवा।

इस प्रकार से इस संगठन ने हिंदू धर्म के प्रचार व प्रसार के लिए डच भाषा में पुस्तकों को छपवाकर वितरित किया तो अनेक लोगों ने इस संगठन को सहयोग दिया तथा जो लोग इस संगठन से सहमत नहीं थे वे भी अन्ततः इसकी महत्ता को मानने लगे। यहां पर विशेष बात मैं अवश्य ही लिखूंगा कि इस संगठन में छः सदस्यों में पांच सदस्य आर्मसमाजी तथा एक पौराणिक विचारधारा का है।

हिंदू धर्म शोध संगठन के कार्य को आगे बढ़ता देखकर सभी आर्यजनों नें भी पुनः मिलकर इस पर विचार किया तो इन्होंने उन्हें अपना पूर्ण सहयोग व सहायता प्रदान करने का वचन दिया तथा परस्पर मिलकर आगे कार्य करनें का निश्चय किया।

इस संगठन का मुख्य उद्देश्य है कि वर्तमान नवयुवक जो भारतीय वैदिक सभ्यता से दूर भाग रहा है उसे अपने धर्म व संस्कृति की ओर लाना। संगठन में श्री गंगाप्रसाद जी कलपु अपनें सभी सहयोगियों के साथ-साथ हिंदी भाषा का भी लग्न है। डच भाषा के साथ-साथ हिंदी भाषा का भी प्रचार व प्रसार करना इस संगठन का उद्देश्य है।

हिंदू धर्म शोध संगठन कें मुख्य सदस्य इस प्रकार से हैं।

(1) श्री गंगाप्रसाद जी कलपु।
(2) हरिराम वरण जी।
(3) जयप्रसाद सुख जी।
(4) श्री प्रेमचन्द जी।
(5) स्वामी विहारी जी।
(6) पण्डित दातादीन जी।

इस संगठन के सभी सदस्य डच एवं हिंदी भाषा में अतिनिपुण हैं। आप सबका आपस में मित्र भाव व परस्पर प्रेम इस संगठन को उन्नत करनें में अति सहायक है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवेदन

मैं अपनी जानकारी के अनुरूप होलैण्ड के पण्डित वर्ग का सामान्य परिचय दे रहा हूं। इनमें बहुत से मेरी जानकारी में न होने के कारण छूट गये हैं, बहुतों के विषय में सामान्य जानकारी ही है। अतः उन सभी से मेरा नम्र निवेदन है कि वे अपना परिचय संक्षेप में यदि लिख सकें तो आगामी प्रकाशन में दिया जा सकेगा। जिनके परिचय में कोई कमी रह गयी है उनसे भी मेरा निवेदन है कि वे सूचित करें जिससे कि आगे सुधार किया जा सके।

रामपाल शास्त्री

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री पं० ऋषि तिवारी जी

होलैण्ड में नहीं अपितु सूरीनाम देश में भी श्री पं० ऋषि तिवारी जी जैसा योग्य पण्डित कोई अन्य नहीं है।

हालैण्ड आर्यसमाज रूपी पौधा इस समय वट वृक्ष की भांति फैल रहा है। उस समाज रूपी पोधे को अपने परिश्रम से सींचने वालों में से एक प्रमुख व्यक्ति हैं। हालैण्ड में आर्यसमाज रूपी संस्था के आप स्तम्भ हैं। आपकी विद्वत्ता के सामने कोई भी विधर्मी नहीं रुक पाता है।

आपका स्वाध्याय अगाध है, आपकी कार्यक्षमता व कर्मठता भावी पीढ़ी के लिए उदाहरण है। आपका समस्त परिवार एक शिक्षित परिवार है।

हालैण्ड में किसी भी समाज अथवा संस्था पर जब भी कठिनाई आई है तो आपने उसे अच्छी तरह सुलझाया है।

शास्त्रार्थ की जहां पर चर्चा आती है तो पं० ऋषि तिवारी जी को ही याद किया जाता है।

आज हालैण्ड का समस्त आर्यसमाज आपकी छत्रछाया में दिन दुगुनी रात चोगुनी उन्नति कर रहा है।

माता सुमंगलार्यति जी संन्यासिनी



आपका जन्म सूरीनाम देश में हुआ। सूरीनाम देश में ही शिक्षा प्राप्त करने के बाद वहीं पर गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया। यहां पर आप आर्य दिवाकर सभा में हिन्दी पढ़ाती थी तथा पण्डिता भी थी। 1961 में आप हालैण्ड में आकर आर्य दिवाकर सभा सूरीनाम से आप पण्डिता बनकर आई थी। अतः आपने हालैण्ड में भी आते ही स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के मिशन को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवेदन

मैं अपनी जानकारी के अनुरूप होलैण्ड के पण्डित वर्ग का सामान्य परिचय दे रहा हूं। इनमें वहुत से मेरी जानकारी में न होने के कारण छूट गये हैं, बहुतों के विषय में सामान्य जानकारी हो है। अतः उन सभी से मेरा नम्र निवेदन है कि वे अपना परिचय संक्षेप में यदि लिख सकें तो आगामी प्रकाशन में दिया जा सकेगा। जिनके परिचय में कोई कभी रह गयी है उनसे भी मेरा निवेदन है कि वे सूचित करें जिससे कि आगे सुधार किया जा सके।

रामपाल शास्त्री

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री पं० ऋषि तिवारी जी

होलैण्ड में नहीं अपितु सूरीनाम देश में भी श्री पं० ऋषि तिवारी जी जैसा योग्य पण्डित कोई अन्य नहीं है।

हालैण्ड आर्यसमाज रूपी पौधा इस समय वट वृक्ष की भांति फैल रहा है। उस समाज रूपी पोधे को अपने परिश्रम से सींचने वालों में से एक प्रमुख व्यक्ति हैं। हालैण्ड में आर्यसमाज रूपी संस्था के आप स्तम्भ हैं। आपकी विद्वत्ता के सामने कोई भी विधर्मी नहीं रुक पाता है।

आपका स्वाध्याय अगाध है, आपकी कार्यक्षमता व कर्मठता भावी पीढ़ी के लिए उदाहरण है। आपका समस्त परिवार एक शिक्षित परिवार है।

हालैण्ड में किसी भी समाज अथवा संस्था पर जब भी कठिनाई आई है तो आपने उसे अच्छी तरह सुलझाया है।

शास्त्रार्थ की जहां पर चर्चा आती है तो पं० ऋषि तिवारी जी को ही याद किया जाता है।

आज हालैण्ड का समस्त आर्यसमाज आपकी छत्रछाया में दिन दुगुनी रात चोगुनी उन्नति कर रहा है।

माता सुमंगलायति जी संन्यासिनी



आपका जन्म सूरीनाम देश में हुआ। सूरीनाम देश में ही शिक्षा प्राप्त करने के बाद वहीं पर गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया। यहां पर आप आर्य दिवाकर सभा में हिन्दी पढ़ाती थी तथा पण्डिता भी थी। 1961 में आप हालैण्ड में आकर आर्य दिवाकर सभा सूरीनाम से आप पण्डिता बनकर आई थी। अतः आपने हालैण्ड में भी आते ही स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के मिशन को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे बढ़ाने हेतु आर्यसमाज का प्रचार आरम्भ कर दिया। 1961 में आपनें हालैण्ड में पहला दीपावली पर्व सार्वजनिक तौर पर मनाया। इस समय तक हालैण्ड में ही बहुत कम संख्या में थे। फिर भी जहां कहीं हिन्दू नवयुवक दीखते उनसे मिलकर भारतीय संस्कृति व सभ्यता की और प्रेरणा करती।

1963 में आपनें अपना एक आर्यसमाज स्थापित कर दिया था। जिसके माध्यम से आप परिवारों में हवन सत्संग के माध्यम से आर्य-समाज का प्रचार करती थी।

1968 में अनेक आर्यसज्जनों ने मिलकर आर्यसमाज की स्थापना की और आपको समाज की पण्डिता घोषित किया गया।

1969 से युगांडा के शरणार्थियों का सहयोग करने हेतु उनके पास गई।

1972 में आपनें भारत की प्रथम यात्रा की। 1976 में आर्य-समाज स्थापना दिवस पर फिर भारत की दूसरी यात्रा की। 1978 में भारत की तीसरी तथा 1980 में चौथी यात्रा की।

1983 में आपने भारत की पांचवीं यात्रा ऋषि निर्वाण शताब्दी पर की।

स्वामी इन्द्रवेश जी व स्वामी अग्निवेश जी की अध्यक्षता में दिल्ली में सम्पन्न ऋषि निर्वाण शताब्दी पर आपने संन्यास ग्रहण कर स्वामिनी सुमंगलायति बन गई। आपके दीक्षा गुरु स्वामी इन्द्रवेश जी, स्वामी अग्निवेश जी ने आपको जहां भरपूर आशीर्वाद दिया वहां पर जनता ने भी आपका सम्मान किया। 1986 में आपने आर्यसमाज शान्तिकिरण की स्थापना की। 1984 में देनरहेल्दर में आर्यसमाज की स्थापना की। 1988 में जन अधिकार सेवा संघ की स्थापना की।

आपनें एकता भवन में हिन्दो शिक्षा बच्चों को दी तथा आसन आर्यसमाज व देनहेल्दर आर्यसमाज में भी हिन्दी पाठशाला के माध्यम से सेवा कार्य किया।

आपने हिन्दी शिक्षिका का तथा पण्डिता का प्रमाण-पत्र दिवाकर सभा सूरीनाम से प्राप्त है।

बड़ी आयु होने पर भी आप हालैण्ड में स्थान-स्थान पर प्रचार कार्य करती हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2 अक्तूबर को जन अधिकार सेवा संघ के तत्वाधान में सम्पन्न कार्यक्रम आपके परिश्रम का फल है। आप हर वर्ष यात्रा पर आती हैं।

आपका स्वाध्याय व अध्ययन भी अच्छा है।

श्री पं० रामप्रसाद जयजयराम जी

पिता—श्री एस० जयजयराम जी।
माता—श्रीमती रामराजी।
जन्म स्थान—लारावेक सूरीनाम।
जन्म-तिथि—15 मई 1915
शिक्षा—अनेक अध्यापकों से डच व हिन्दी।

परिवार—20 वर्ष की आयु में आचार्य अर्जुन शर्मा द्वारा विवाह संस्कार, 5 पुत्र व 6 पुत्रियां, जिनमें से एक पुत्र का स्वर्गवास।

सेवायें—अनेक सभाओं के द्वारा धर्म-प्रचार, यथा आर्य दिवाकर महासभा, खेल संस्थायें, भारतीयों के महान् नेता सभापति श्री लक्ष्मण जी के साथ संयुक्त हिन्दुस्तानी पोलिटिकल पार्टी में वर्षों सक्रिय सेवा, वृद्धजनों की सेवा, श्मशान संस्था के अधिकारी, संगीत, भाषण व यज्ञ संस्कारों में विशेष सेवाएं। 60 वर्ष की आयु में सूरीनाम त्यागकर हालैण्ड आए।

पं० आर. किशुनदयाल



आपका जन्म 18 दिसम्बर 1922 को दिस्त्रिक सुरीनाम में दोईस्वोर्ग में हुआ। आपकी माता लक्ष्मीदेवी तथा पं० दरोगा जी पौराणिक परम्पराओं से जुड़े हुए थे। अत: आपका प्रारम्भिक जीवन भी पौराणिक मान्यताओं के अनुसार ही था। माता-पिता से ही आपने हिन्दी भाषा पढ़ी, आप अपने दादा जी के साथ प्रतिदिन सायं प्रात: पूजा-पाठ में बैठते थे। पं० अयोध्याप्रसाद जी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बी. ए. के संसर्ग में आकर आपनें 1934 में वेदिक धर्म की दीक्षा ले ली। आपनें जन-सेवा को अपने जीवन का उद्देश्य बनाया। आपके कार्य एवं लगन को देखकर जनता नें आपको मजदूर दल का प्रधान बनाया।

सम्प्रति आप नेंईदरलाँक में आर्योपदेशक का कार्य कर रहे हैं। आप एक सकुशल पुरोहित एवं स्वाध्याय प्रेमी हैं।

स्वर्गीय श्री बृहस्पति जी का परिचय

श्री बृहस्पति जी का जन्म 12 मई 1922 को सूरिनाम की राजधानी पारामारिबो के पास एक गांव वानिका कानाल "न्यू लिबानोंन" में हुआ था। इनके पिता श्री ब्रह्मप्रसाद नारायण उसी गांव के एक किसान थे। आपके दादा श्री नारायण जी मूलत: भारत के भोजपुरी प्रदेश के निवासी थे। बृहस्पति जी ने बचपन में साधारण शिक्षा प्राप्त की तथा खेती करनें लगे। खेती के साथ-साथ घर पर ही डच भाषा तथा हिन्दी की भी शिक्षा आपने प्राप्त की। सरस्वती के पुजारी को मात्र खेती से सन्तोष नहीं था। इसी बीच आप सूरिनाम की सेना में भर्ती होगये, तथा दो वर्षों तक वहाँ काम करते रहे। सेना से लौटकर आप फिर किसान बन गए और उसके बाद आपने ठेंकेदारी शुरू की। परिश्रमी किसान और कुशल सैनिक अब सड़कें और मकान बनवाने लगा। अन्त में लड़कों के बड़े हो जाने पर हल और बन्दूक के धनी ने लेखनी के धनी बननें की ठानी और भारत आकर संस्कृत एवं हिन्दी का सुव्यवस्थित अध्ययन किया। कोविद तक की परीक्षायें पास कीं तथा सूरिनाम में हिन्दी प्रचार-प्रसार का बीड़ा उठाया। आपने एक पुस्तक "हिन्दी बोध ज्ञान दीपिका" लिखी तथा स्वयं प्रकाशित करके उसकी पांच हजार प्रतियां सूरिनाम और होलैण्ड के भारतीय लोगों में मुफ्त वितरित की।

आर्य सभा समाज एवं प्रभाकर आर्यसमाज की स्थापना में मुख्य सहयोग रहा।

श्रीमती एवं श्रीमान् गयाप्रसाद जी मलहू

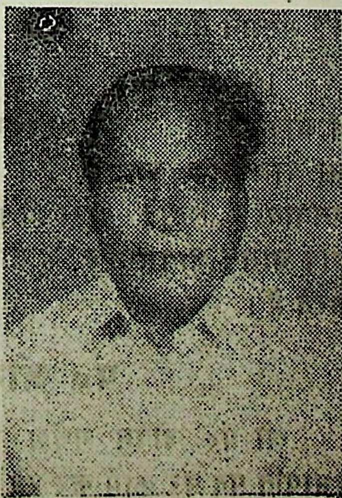
प्रभाकर आर्यसमाज के नींव के पत्थरों में से आप भी एक योग्य और कर्मठ कार्यकर्ता हैं। अनेक प्रकार के कष्टों को सहन करते हुए आपने प्रभाकर आर्यसमाज को एक विशाल रूप में लानें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए परिश्रम किया। आपका स्वभाव अति उत्तम एवं मिलनसार है। आप समाज में सभी को साथ लेकर चलते हैं। प्रभाकर समाज में आप इस समय उपप्रधान पद पर कार्य कर रहे हैं। आपकी धर्म-पत्नी भी आपके स्वभावानुसार एक आदर्श महिला थी। आपको समाज के कार्यों में पत्नी की ओर से पूर्ण सहयोग मिलता था 5 अगस्त को अचानक श्रीमती मलहू जी का स्वर्गवास होने से आप अकेले रह गये। इस समय आप सूरीनाम तथा होलैण्ड दोनों देशों में प्रचार कार्य करते हैं। आपकी सुपुत्री श्रीमती शिक्षा जी भी सूरीनाम देश में एक योग्य पण्डिता है। प्रायः हर वर्ष आप भारत यात्रा पर आते हैं। यहां पर भी समाजों में भजन आदि कार्यक्रम आप करते हैं। आप पं० प्रकाश जी कविरत्न के भजनों के विशेष प्रशंसक हैं। दान की आप में सदा रूह रहती है। आपका जीवन एक आर्य पवित्र जीवन है।

पं० रामदेव रामावतार जी



आपका जन्म सूरीनाम देश में हुआ। आपका बचपन आर्य दीवाकर सभा द्वारा संचालित आर्य अनाथालय में शिक्षा प्राप्त कर बड़ा हुआ। आपने सूरीनाम देश में आर्यसमाज का प्रचार काफी मात्रा में किया।

इस समय कई वर्षों से आप होलैण्ड में आकर बस गये। यहां पर आपने प्रभाकर आर्यसमाज के माध्यम से आर्यसमाज का प्रचार किया तथा अब भी कर रहे हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय आप प्रभाकर समाज में उपप्रधान पद पर कार्य कर रहे हैं। होलैण्ड में आरम्भ के आर्यों में आपकी गिनती होती है। प्रभाकर समाज बनाने में आपनें सहयोग किया।

आपकी सुपुत्री कीर्ति अवतार द्वारा स्थापित आर्यसमाज दोरद्रखत में भी आपका पूर्ण सहयोग मिलता है। आप अनेक बार भारत यात्रा पर आ चुके हैं।

श्री पं० अवधबिहारी जी

आपका जन्म सूरीनाम देश के गांव माखदनलेरख में 10 जून 1922 ई० को हुआ।



आपने बचपन का कुछ समय गांव में ही व्यतीत किया। उसके पश्चात् आप पढ़ने के लिए शहर पाशमारी बोऊ आ गये।

यहां पर आप पढ़ने के साथ-आर्य दिवाकर सभा के सदस्य बन गये। 1949 में श्री ठाकुरप्रसाद जी की पुत्री गंगादेवी जी से आपका विवाह सम्बन्ध हुआ।

आपने जीवन-निर्वाह हेतु एक लकड़ी का कारखना खोला। आप 12 सन्तानें हैं।

1974 में आप होलैण्ड में आकर बस गये। देन हाक हालैण्ड में आकर आप आसन आर्यसमाज के प्रचारक पद पर आसीन हुए। जो आज तक कार्यरत हैं। आपने 1980 में एक धार्मिक रेकार्ड बनवाया। जिसके द्वारा होलैण्ड में बहुत प्रचार हुआ। इस समय आप आसन आर्यसमाज के माध्यम से सम्पूर्ण होलैण्ड में प्रचार काय करते हैं।

पं० जीवन गणेश जी

श्री पं० जीवन गणेश जी इस समय प्रभाकर आर्यसमाज के सभापति पद पर कार्य कर रहे हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आपके पिता एक सच्चे ऋषि भक्त हैं। आपके अन्दर आर्यत्व के गुण कूट-कूटकर भरे हुए हैं। आपकी कार्य-कुशलता व कर्मठता अति सराहनीय तथा लोगों के लिए भी अनुकरणीय है।

यद्यपि इस समय आपका स्वास्थ्य कुछ अच्छा नहीं चल रहा फिर भी किसी भी कार्य में कोई न्यूनता नहीं आती है।

समाज का सब कार्य आप अति निपुणता से करते हैं। सूरीनाम देश में भी आपका परिवार आर्यसमाज चलाता है। आप फुटबॉल के अच्छे खिलाड़ी हैं। समाज के कार्य हेतु आपकी लग्न अति प्रशंसनीय है।

आर्यसमाज में जहां कहीं पर भी आपको यह पता चले कि यहां पर शिथिलता आ रही है। आप तुरन्त अपना समय लगाकर उसे प्रोत्साहन देते हैं।

रोटरडाम से कई घण्टे गाड़ी चलाकर जाते हैं आप लेवार्दन में पढ़ाने के लिए।

1985 में आपके साथ रहकर मैंने आपकी कर्मठता को पास में रहकर देखा है।

अगर मैं भूल नहीं करता तो हॉलैण्ड में केवल मात्र आप एक ही ऐसे पण्डित हैं जो प्रतिदिन प्रातः परिवार सहित हवन करते हैं। आप एक अच्छे पण्डित के साथ-साथ अच्छे गायक भी हैं। समाज में हिन्दी पाठशाला में आप शिक्षा देते हैं तथा संगीत की शिक्षा तो केवल मात्र प्रभाकर समाज़ में आप ही देते हैं।

पिछले दिनों आप सपत्नी भारत यात्रा पर आये। अनेक गुरुकुलों तथा समाजों को देखा और दान भी दिया।

आपके सहयोग से ही मेरी 1985 की यात्रा सफल हो सकी तथा आर्य वीरदल का जो भी कार्य हो रहा है उसमें भी आपका पूर्ण सहयोग है। आपने एक पुस्तक का भी सम्पादन किया जो प्रभाकर समाज ने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छपाई है (प्रभाकर स्वर्ण पथ)।

आर्यसमाज में आपने पुस्तकों का विशेष संग्रह किया हुआ है।

आपका व्यक्तिगत पुस्तकालय भी विशाल है।

अध्ययन की रुचि आपको बहुत है।

आपके सभापतित्व में प्रभाकर आर्यसमाज उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा है।



रामपाल शास्त्री पं० जोवन गणेश व पण्डिता सूर्यवती गणेश।

श्री पं० जोवन गणेशाभिनन्दनम्

सुयज्ञानुरागिन् ! शुभकृत्यस्नेहिन् ;
समाजानुलग्नार्यवरेन्द्रप्रधोन्द्र !
मखेन रक्तं शुभजीवनं शम्,
सुदम्पते ! ते ह्यभिनन्द्यते वै ॥१॥
प्रेमाश्रुसिक्तैर्नयनैर्वरेण्यम !
हर्षान्वितैर्हृद्यमनोऽभिरञ्जितैः ।
स्नेहानुसिक्तैस्तव हृत्पयोधरैः,
विद्यार्थिनामार्यसभासदैः सदा ॥२॥
हालैण्डप्राभां प्रभातश्चिकीर्षुः

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभाकराख्यस्य समाजार्यजातम् ।
सभापतित्वं वहमानधन्यः,
प्रयासो गणेश ! विकासं लभेत ॥३॥
दयानन्दभक्तिस्समाजानुसक्तिः,
सुयज्ञानुरक्तिश्शुभाचारशक्तिः ।
प्रवर्धतामय्यनुरक्तिरस्मान्,
भृशङ्गणेशार्यवदान्य मान्य ! ॥४॥

प्रधान कार्यकर्त्ता
रामपाल शास्त्री
12-1-1990

निवेदक
आर्य विद्यार्थी सभा
गुरुकुल गौतम नगर, दिल्ली

श्री विष्णुप्रसाद जयपाल जी

आपका जन्म सूरीनाम देश में हुआ। आपके पिता श्री जयपाल जी एक सच्चे आर्य ऋषि भक्त हैं। पिता के अनुसार आप भी आर्य विचारों से ओतप्रोत हैं। आर्य सभा समाज में आप सभापति पद पर कार्य करते हैं। आप हालैण्ड में शिक्षक पद पर कार्य करते हैं। आप हालैण्ड में शिक्षक पद पर कार्य करते हुए समाज के कार्यों में भी खूब बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। आपकी कार्यक्षमता अत्यधिक है। आर्य सभा समाज की जो आज हालैण्ड की प्रमुख समाजों में गिनती है वह सब आपके परिश्रम से ही है। आपने आर्य वीरदल के प्रचार में मेरा प्रमुख साथ दिया। आपकी पुत्री कु० रेणु आर्या अतिप्रतिभावान् पुत्री है। छोटी अवस्था में ही हवन करती तथा अच्छे भजनों को स्टेज (मंच) पर गाती है।

इस समय आर्यसमाज आपके सभापतित्व में कार्य करता हुआ अपने कार्यों में संलग्न है।

पं० हरि विश्वेश्वर जी



आपका जन्म सूरीनाम देश में हुआ। आप प्रारम्भ से ही एक अच्छे प्रवीण तथा बुद्धिमान् छात्र के रूप में माने जाते थे। आप अपने परिश्रम व लग्न से शीघ्र ही अध्यापन कार्य करने लगे। आप एक योग्य शिक्षक हैं। हालैण्ड में आने के बाद भी आपने यहां पर भी अध्यापन कार्य किया। इस समय आप प्रभाकर आर्यसमाज के माध्यम से

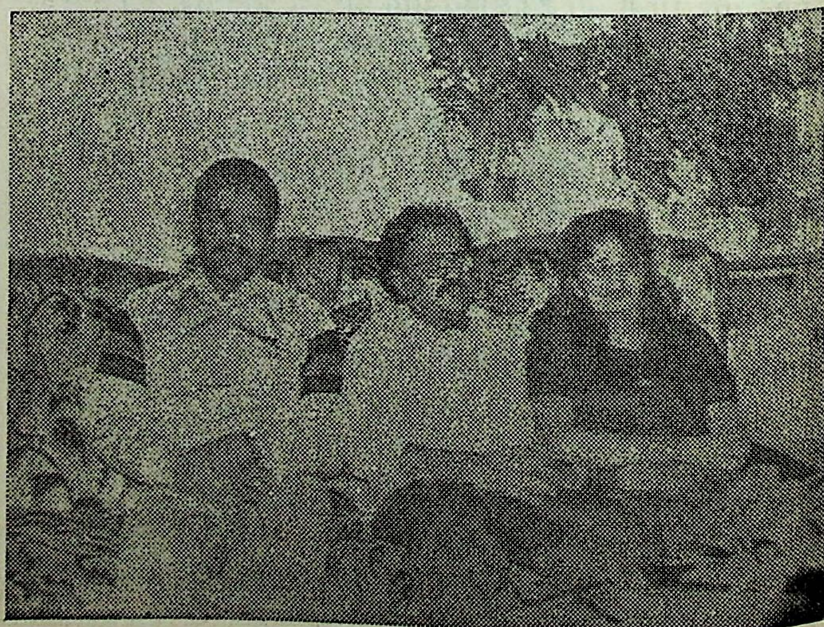
CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचार कार्य करते हैं। प्रभाकर आर्यसमाज के अतिरिक्त आप आर्य समाज दोरद्रखत आदि अन्य समाजों में भी पूर्ण सहयोग करते हैं।

प्रभाकर समाज में मन्त्री पद पर कार्य करते हुए हवन प्रवचन द्वारा तथा हिन्दी पाठशाला में शिक्षण के द्वारा आर्यसमाज का कार्य करते हैं। हिन्दी भाषा के साथ-साथ आप डच एवं अंग्रेजी में अतिनिपुण हैं। 1988 की यात्रा का सब कार्यभार आपने मेरे लिए सब अपने ऊपर लेकर व्यवस्था की थी।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रदेई विश्वेश्वर जी एक योग्य आर्य महिला के साथ-साथ योग्य पण्डिता भी हैं। आपका स्वभाव अति सरल एवं मृदुभाषी है। अतिथि सेवा आपका भूषण है। दानशीलता आपमें एक प्रमुख गुण है। अनेक बार भारत एवं अन्य देशों की आप दोनों यात्रा कर चुके हैं। भारत में आर्य अनाथालय पाटौदी हाउस दरियागंज में 50 हजार रुपये दान देकर दान का एक उदाहरण प्रस्तुत किया। 4 मास मैं आपके घर पर रहा तो मुझे कभी भी आपने यह महसूस नहीं होने दिया कि मैं इस घर से अलग हूँ। मैं आप द्वारा प्रदत्त सेवा के लिए सदा ही आभारी रहूंगा।

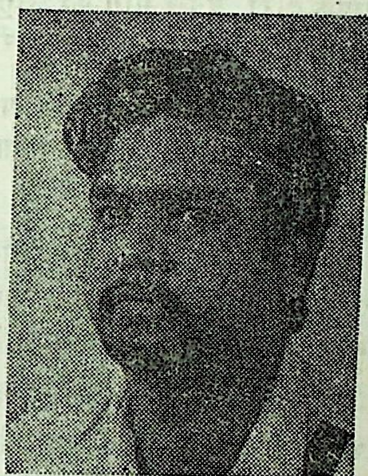


रामपाल शास्त्री पं० हरिविश्वेश्वर जी पण्डिता चन्द्रदेई विश्वेश्वर जी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री नारायण जी दोदा



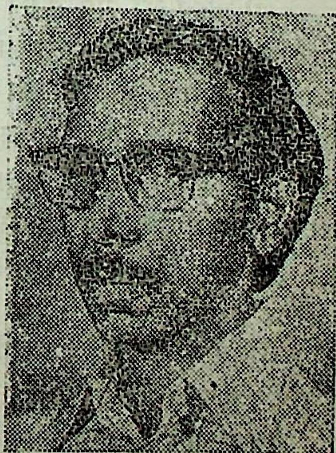
आपका जन्म सूरीनाम देश की राजधानी पाराभारीवो में 1 अप्रैल, 1953 में हुआ। आपके पिता श्री शिवशंकर दोदा जी थे। माता का नाम श्रीमती रामगसोत्रादि था। आपके पिता एक अच्छे कृषक थे।

आपने 1981 में हॉलैण्ड में आकर इस देश की नागरिकता स्वीकार कर ली। यहां पर आपने रोटरडाम में स्थित फोकर हवाई अड्डे पर सर्विस आरम्भ की। इस समय सरकारी कार्य छोड़ दिया है।

30 मार्च 1988 में आपने अपने कई मित्रों के साथ मिलकर आर्यसमाज वैदिक ज्योति संगठन की स्थापना की।

आप समाज के मन्त्री पद पर कार्य कर रहे हैं। आपने अपना इकलौता पुत्र श्रवणकुमार भारत में पढ़ने हेतु भेजा हुआ है।

श्री पं० बृजलाल बक्तावरजी



आपका जन्म 5 अक्तूबर 1930 ई० को श्री इन्दल बक्तावर जी के घर लकुआ गांव में हुआ।

आपके पिता श्री इन्दल बक्तावर गांव के मुखिया थे। 1944 में आप का परिवार गांव लकुआ छोड़कर राजधानी पारामारिवो के निकट गांव ब्लाऊखोन्द में आकर बस गया।

आपके पिता श्री इन्दल बक्तावर जी एक कर्मठ व लग्नशील सच्चे आर्य थे। आपने सूरीनाम में आर्यसमाज का बहुत कार्य किया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता के विचारानुसार पुत्र श्री बृजलाल बक्तावर भी प्रारम्भ से आपके द्वारा प्रदत्त मार्ग का अनुसरण करने लगा। आपने U.L.O. स्कूल से शिक्षा प्राप्त कर सरकारी सर्विस प्राप्त की।

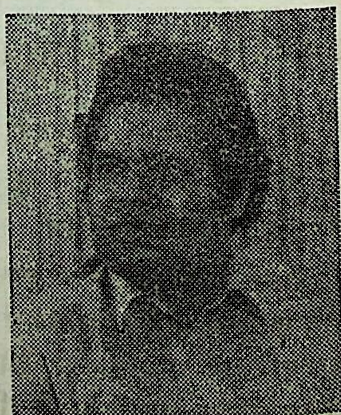
1974 ई० में आप अपने परिवार सहित होलैण्ड में आकर बस गये। यहां आकर भी आप सामाजिक कार्यों में भरपूर सहयोग सहायता प्रदान करने लगे।

1983 में श्री पं० रामप्रसाद जी व श्री देवदत्त सुखराज ने कई पण्डित एवं पण्डिताओं को प्रशिक्षण दिया। उन्हीं पण्डितों में आपका नाम भी महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

आप सरकारी सर्विस छापेखाने (प्रिंटिंग प्रेस) का कार्य करते हुए भी आर्य सभा समाज को तथा वैदिक ज्योति संगठन समाज को भरपूर सहयोग करते हैं। आर्य सभा समाज में पण्डित के साथ-साथ आप सभा के उपप्रधान पद पर भी कार्य कर रहे हैं।

समाज में बच्चों को पढ़ाने के साथ-साथ संगीत शिक्षा भी आप समाज में सभी को निःशुल्क देते हैं। आप एक अच्छे गायक हैं।

श्री राजगोपालाचार्य तुकून जी

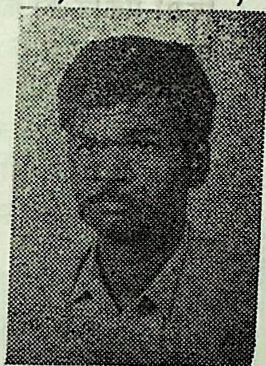


श्री तुकून जी एक कर्मठ आर्य कार्यकर्ता हैं। आप द्वारा पोषित प्रभाकर समाज में आर्य वीर दल आपके परिश्रम का फल है। आपका व्यवहार सदा ही हंसमुख रहता है। आपका जन्म सूरीनाम देश में हुआ है। इस समय आप काफी दिन से होलैण्ड में रह रहे हैं। एक बार आप भारत भ्रमण भी कर चुके हैं। प्रभाकर समाज में आप पण्डित हैं। पं० जीवन गणेश जी के साथ आप समाज का कार्य बड़ी श्रद्धा लग्न से करते रहते हैं। इस समय आप आर्य वीर दल के सभापति पद पर रहते हुए कार्य में संलग्न हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री पं० भाईलाल जी कुशल



आप सूरीनाम देश से होलैण्ड में आकर बस गये। आपने आर्य विचारों से प्रभावित होकर आर्यसमाज में प्रवेश किया। स्वामी इन्द्रवेश एवं अग्निवेश जी के विचारों से प्रभाविहत होकर आपने एक आर्यसमाज की स्थापना की जिसका नाम दयानन्द सभा होलैण्ड रखा। आप इस समय समाज के सभापति पद पर कार्य कर रहे हैं। समाज का कार्य आपकी देख में अच्छा हो रहा है। आपने अपने पुत्रों को भी आर्यसमाज के पण्डित बनाकर समाज के कार्यों में सहयोग करने के लिए प्रेरित किया है।

श्री गंगाप्रसाद जी कलपू

आपका जन्म सूरीनाम देश में हुआ। आपके पिता श्री महिलाल कलपू जी एक सच्चे ऋषि भक्त कट्टर आर्यसमाजी थे। समस्त सूरीनाम में आपके पिता श्री महिलाल जो कलपू के भजनों की धूम मची हुई थी।

आपने सूरीनाम में शिक्षक पद पर कार्य करने के पश्चात् होलैण्ड में भी इस समय तक आप अध्यापक पद पर कार्य कर रहे हैं। आप बड़े ही मृदुभाषी हैं। आपमें अनुपम कर्मठता है। 1985 में आपने ही मुझे होलैण्ड आने के लिए अपना स्पोन्सर पत्र दिया।

हिन्दु धर्म शोध संगठन व जन अधिकार सेवा संघ तो आपने अपने पुरुषार्थ से बनाये ही हैं इसके अतिरिक्त आप अनेक समाजों में भी सहयोग करते हैं। मैंने बार-बार आग्रह किया फोटो भेजने का। परन्तु आप सदा ही यह कहते रहे कि मैं इतना बड़ा नहीं हूं कि जो मेरा फोटो छपे।

पण्डिता सूर्यावती जी गणेश

श्री पं० गणेश जी की धर्मपत्नी श्रीमती सूर्यावती गणेश एक धार्मिक विचारों वाली सुशिक्षित आर्य महिला है।

आपका स्वभाव अति उत्तम एवं मिलनसार है। प्रभाकर आर्य समाज की आप पण्डिता हैं। आपमें अतिथि सेवाभाव अत्यधिक है। प्रभाकर आर्यसमाज के बाल्यकाल से उत्तर अवस्था तक पहुंचाने में आपका परिश्रम भी स्मरणीय है।

1958 में 3 मास तक मैं आपके सान्निध्य में रहा। कभी भी मुझे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

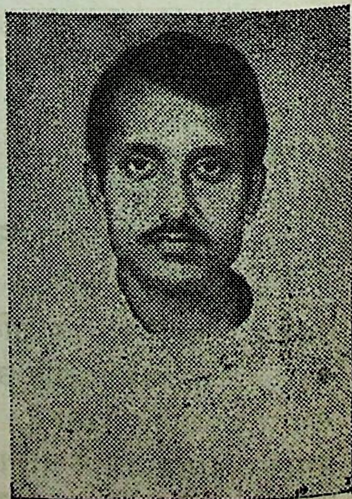
किसी प्रकार की कठिनाई आपके घर पर नहीं हुई। आप प्रतिदिन प्रात:काल यज्ञ के पश्चात् ही अन्य कार्य करती हैं। आपने अपनी सन्तानों को भी योग्य बनाने का यत्न किया है। आपकी सुपुत्री कु० सोमा व कु० कविता बहुत अच्छे ढंग से हवन कराती हैं तथा गायन विद्या में भी दोनों अति निपुण हैं।

श्रीमती पण्डिता चन्द्रकली सिंह



आपका जन्म डच गायना देश में हुआ। आपका यज्ञोपवीत संस्कार श्री पं० उषर्बुध जी ने किया। इस समय आप होलैण्ड में आर्य सभा समाज एवं दोरद्रखत समाज के माध्यम से प्रचार कर रही हैं। आर्य सभा समाज में महिला आर्यसमाज में आप पण्डिता हैं। आपके सभापतित्व में दौरद्रखत आर्य समाज भी उन्नति के शिखर की ओर अग्रसर है। समस्त हालैण्ड में आप हवन प्रवचन के माध्यम से प्रचार कार्य करती हैं। आपमें आर्यसमाज का प्रचार करने की बड़ी धुन रहती है। महिलाओं में आपका विशेष प्रभाव है। सेवा भाव भी आपका एक विशेष गुण है।

पं० आनन्द कुमार बिरजा



श्री आनन्दकुमार का जन्म सूरीनाम देश में हुआ। १९७४ में आप भारत में गुरुकुल झज्जर में विद्याध्ययन करने के लिए आए। यहाँ पर कुछ समय तक पढ़ने के बाद गुरुकुल सिंहपुरा रोहतक में रहे। उसके बाद आप गुरुकुल कांगड़ी में एम.ए. करने के लिए चले गये। यहां आपने वेद विभाग से एम. ए. किया तथा यहीं से पीएच. डी. कर डाक्टर की उपाधि ग्रहण कर अपना तथा अपने माता-पिता सहित अपने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

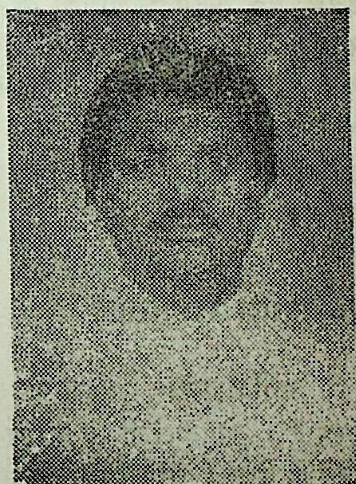
देश का नाम रोशन किया। आप एक अच्छे वक्ता के साथ-साथ गायक भी हैं। आपने अनेक कष्टों को सहन कर विद्याध्ययन किया है।

आपको पढ़ाने में आप की बहन आशा बक्शी तथा विद्या व जोन बक्शी का एवं महेन्द्र जी का परिश्रम सराहनीय है।

इस समय आप होलैण्ड में प्रचार कार्य में लगे हुए हैं। आपका परिचय एक इतिहास बनता है अगर लिखूं तो, परन्तु समय तथा स्थानाभाव के कारण इतना ही लिखता हूँ।

आप क्या हैं, आपने क्या पढ़ा है इसका पता आपके प्रवचन सुने तो चल जावेगा। आपकी जिह्वा से सरस्वती बरसती है। आपने १०-१५ वर्षों तक गुरुकुलों में विद्याध्ययन किया है, इसलिए आप अच्छे ढंग से हौलैण्ड में प्रचार कार्य कर रहे हैं।

पं० देवानन्द भगेलू



पं० देवानन्द जी भगेलू प्रभाकर आर्यसमाज के तत्कालीन मन्त्री श्री पं० जीवन गणेश जी की प्रेरणा से आर्यसमाज में आये।

पं० जीवन गणेश जी, पं० विश्वेश्वर जी के प्रयास से आप भारत में विद्या ग्रहण करने के लिए आये।

एक वर्ष हिन्दी संस्थान में कोर्स करने के पश्चात् आप हौलैण्ड गये तथा पुनः संस्कृत का ज्ञान प्राप्त करने के लिए गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली में आये।

दो वर्ष यहां पर अध्ययन करने के बाद आप गुरुकुल कांगड़ी में चले गये। गुरुकुल कांगड़ी में कुछ दिन शिक्षा प्राप्त करने के बाद आपने हरिद्वार में ही विवाह सम्बन्ध कर लिया। इस समय आप हौलैण्ड में ही प्रचार कार्य कर रहे हैं।

आपकी गायन में बहुत रुचि है आपके परिवार के लोग बहुत से संगीत में प्रवीण हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० भगवानदत्त जी

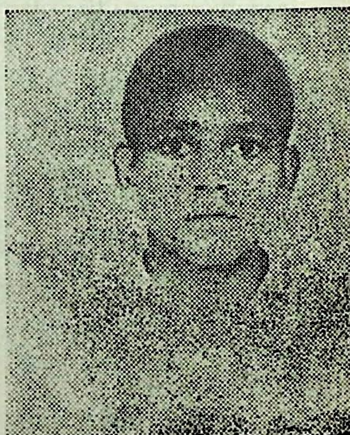
पं० भगवानदत्त जी प्रारम्भ से ही आर्य विचारधारा के मानने वाले धार्मिक सज्जन पुरुष हैं। पं० जीवन गणेश जी की प्रेरणा से भारत आकर दयानन्द वेद विद्यालय गौतम नगर में हिन्दी संस्कृत व योग का छः मास तक अध्ययन व अभ्यास किया।

तत्पश्चात् होलैण्ड जाकर दोनों पति-पत्नी 'आर्य सभा समाज' पण्डित-पण्डिता के पद पर कार्य कर रहे हैं।

आपकी यज्ञ मन्त्रोच्चारण एवं योगाभ्यास में विशेष रुचि है।

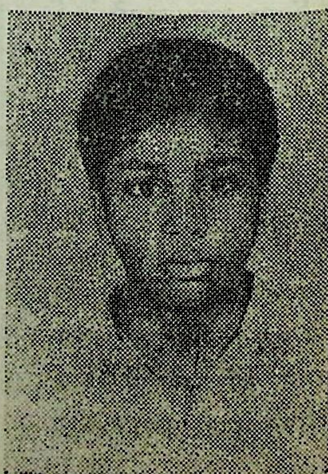
दयानन्द वेद विद्यालय में होलैण्ड के छात्र

ब्र० श्रवण कुमार दोदा



ब्र० श्रवण कुमार दोदा पिछले दो वर्षों से यहां पर पढ़ रहा है। इससे पूर्व गुरुकुल कांगड़ी में भी पढ़ा। आपके पिता श्री नारायण जी दोदा स्वयं एक आर्यसमाज होलैण्ड में चला रहे हैं। इस समय ब्र० श्रवण कुमार पूर्व मध्यमा में पढ़ रहा है।

ब्र० सतीश रामप्रसाद



सतीश कुमार गुरुकुल का एक छात्र है। जो होलैण्ड से आया है पढ़ने के लिए। इसके पिता का नाम जगत रामप्रसाद है। जो 1976 में होलैण्ड में आये थे सूरीनाम से। श्री जगत रामप्रसाद जी सामाजिक कार्य में अपनी जिन्दगी व्यतीत कर रहे हैं। वे निवरवाईन के समाज में काम करते हैं और पौराणिक कार्य करते रहते हैं। दो साल पहले

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्होंने एक रामायण सम्मेलन मनाया था 14 दिन का। उस से पहले भी उन्होंने गीता तथा वेद सम्मेलन आदि किये थे। इनका बेटा तीन साल से इस संस्था में पढ़ रहा है। यह अपने धर्म और समाज के लिए पढ़ रहा है। इसकी आयु सत्रह साल है।

बहिन आशा वंसी व विद्या जी

आप दोनों श्री आनंदकुमार विरजा की बड़ी बहिनें हैं। आपका जन्म सुरिनाम (पारामारिबोऊ) में हुआ। बहन विद्या जी होलैण्ड में एक अच्छी आर्य गायिका के रूप में जानी जाती हैं। 1985 की यात्रा में आप ने तथा जौन जी ने मेरी भरपूर सहायता की। आपका स्वभाव अति सरल, मधुर तथा मिलनसार है। आपने मुझे आनन्द के समान ही अपार स्नेह व सम्मान प्रदान किया। आपके पुरुषार्थ और परिश्रम से ही आनन्दकुमार भारत में शिक्षा ग्रहण करने में समर्थ हुआ। बहन विद्या जी अनेक समाजों में अपने मधुर भजनों के द्वारा प्रचार में सहयोग करती हैं।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

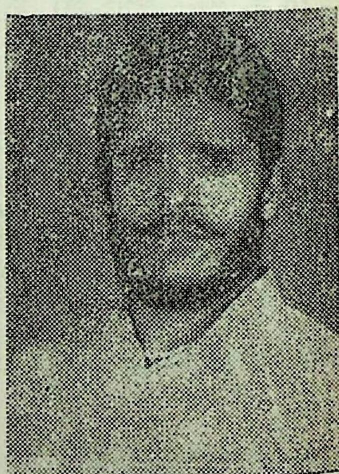
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रामपाल शास्त्री योगाचार्य का

होलैण्ड की राजधानी देनहाख 2-3-4 सितम्बर 1988 में सम्पन्न हिन्दू परिषद् के सम्मेलन में भारत आर्यसमाज के प्रतिनिधि रूप में दिया गया प्रवचन :

ओ३म् सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् । देवा मागं यथापूर्वे सं जनाना उपासते ॥

माननीय सभापति महोदय, देश विदेशों से आये हुए भाई व बहनो ! हम सब मिलकर यहां पर विश्व हिन्दू परिषद् का सम्मेलन कर रहे हैं। मुझे भी यहां पर हिन्दू धर्म की आधुनिक समस्याओं पर कुछ विचार प्रस्तुत करने का अवसर प्राप्त हुआ है।



श्रोतागण ! इतिहास का अन्वेषण करने पर पता चलता है कि संसार में सब से प्राचीन हिन्दू धर्म वैदिक धर्म है। पुरातत्त्व वेत्ता इस बात को एक आवाज में स्वीकार करते हैं कि सबसे प्राचीन पुस्तक ऋग्वेद है।

हिन्दू धर्म की संस्कृति व सभ्यता का मूल वेद, दर्शन शास्त्र, उपनिषद् व स्मृतियां हैं। संसार की सब जातियों को धर्म, ज्ञान, विज्ञान व चरित्र की शिक्षायें यहां से प्राप्त हुई हैं। मनु महाराज ने इस प्रमाण को पुष्ट करते हुए लिखा है—एतत् देश प्रसूतस्य·········

सदा से ही सारे संसार पर हिन्दुओं का चक्रवर्ती राज्य रहा। महाराजा युधिष्ठिर पर्यन्त यहां पर हिन्दुओं का एकच्छत्र राज्य रहा तथा सभी मानवमात्र के लिये हिन्दू धर्म ही माननीय व आचरणीय रहा। तत्कालीन हिन्दू राजाओं की तथा प्रजा की हिन्दू धर्म के प्रति किस प्रकार की आस्था व श्रद्धा थी अगर इसको देखना चाहें तो हमें महाराजा अश्वपति का वह उद्बोधन स्मरण हो आता है जो उन्होंने ऋषियों के सामने घोषणा करते हुए कहा था—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न मे स्तेनो जनपदे.........

उपस्थित श्रोतागण ! इस धरती पर न जानें कितनीं संस्कृतियां व सभ्यतायं आईं और अपना-अपना खेल दिखाकर समाप्त हो गईं। आज उनका कोई नाम लेने वाला भी नहीं बचा, परन्तु मैं बड़े गर्व के साथ यह घोषणा करता हूं कि हिन्दू धर्म जिसके ऊपर न जाने कितने आक्रमण हुए, कभी शकों ने तो कभी हूणों ने और कभी मुसलमानों ने तथा कभी अंग्रेजों ने समय-समय पर अनेक प्रकार के आक्रमणों व अत्याचारों से हिन्दू धर्म को नष्ट करना चाहा परन्तु हमारे पूर्वजों ने समय-समय पर कभी छत्रपति शिवाजी के रूप में तो कभी महाराणा प्रताप के रूप में अनेक हिन्दू धर्म के अनुनायियों नें स्व बलिदान देकर हिन्दू धर्म को आज तक उसी रूप में सुरक्षित रखा हुआ है जिस रूप में आदि सृष्टि में ऋषि-मर्हषियों ने दिया था। इतिहास इस बात का साक्षी है कि विदेश में ही नहीं अपितु भारत देश में भी हिन्दू धर्म को नष्ट करने के अनेक प्रकार के असफल प्रयास हुए। लेकिन हिन्दू धर्म के अनुनायियों ने स्व त्याग तपस्या तथा बलिदान से हिन्दू धर्म को जीवित रखा और उन्हीं बलिदानियों के फलस्वरूप आज हम यहां पर होलैण्ड के प्रमुख शहर देनहाख में यह विश्व हिन्दू परिषद् के सम्मेलन का आयोजन कर रहे हैं जिसमें देश-विदेश से आये हुए विद्वान् अपने विचार आप सबके सामने रख रहे हैं।

सभापति महोदय ! हिन्दू धर्म को अन्य देशीय संस्कृति जैसे मुस्लिम व अंग्रेजियत संस्कृति यत्न करने पर भी हिन्दू धर्म को नष्ट नहीं कर पाई, परन्तु यह हमारा दुर्भाग्य था कि हम आपस में ही लड़ कर सर्वनाश करने में लग गये।

दिल के फफोले जल उठे सीने के दाग से।
इस घर को आग लग गई घर के चिराग से॥

महाभारत का युद्ध इस बात का उदाहरण है कि आपसी गृहयुद्ध का क्या परिणाम होता है। महाभारत के पश्चात् भी भारत देश के इतिहास में कुछ ऐसी घटनायं हुईं जिनके कारण से हिन्दुओं का ह्रास होता गया तथा हम उन्नति की अपेक्षा पतन की ओर अग्रसर होनें लगे।

श्रोतागण ! हमें इस बात पर विचार करना होगा कि हम सब हिन्दू सत्य के मार्ग पर चलते हुए भी तथा दुनिया के सभी भागों में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहते हुए भी पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त क्यों नहीं कर पा रहे हैं। हमें अपने आपको टटोलना होगा, अपने अन्दर झांकना होगा, देखना होगा कि किन कमजोरियों के कारण हिन्दू धर्म विकसित नहीं हो पा रहा है उन दोषों पर विचार करके उन्हें दूर करने का यत्न करें तभी हम हिन्दू धर्म को सुरक्षित रख सकते हैं।

भाइयो बहनो ! इस समय हमारे हिन्दू धर्म पर देश-विदेश में अनेक समस्यायें हैं जो हिन्दू धर्म को समाप्त करना चाहती हैं फिजी के अन्दर हमारे हिन्दू धर्म के अनुयायियों को बलात् ईसाई धम स्वीकार करने के लिये बाध्य किया जा रहा है। सुरिनाम व गयाना में हिन्दुओं के साथ किस प्रकार के अत्याचार हुए तथा हो रहे हैं। मुस्लिम देशों के अन्दर हिन्दू धर्म के माननेवालों को किसी भी प्रकार की धार्मिक स्वतन्त्रता नहीं है जबकि भारत के अन्दर मुस्लिम धर्म को पूर्ण स्वतन्त्रता है। इन समस्याओं पर हमें विचार करना होगा कि किस प्रकार से हम वहां पर हिन्दू धर्म को बचा सकते हैं।

सभापति महोदय ! हिन्दू धर्म के लिये जहां विदेशी समस्यायें हैं, उसके अतिरिक्त भारत देश के अन्दर भी हिन्दू धर्म में कुछ इस प्रकार की कमजोरियां आ गई हैं जिनसे हिन्दू धर्म को भारत में ही खतरा हो गया है। ऊंच-नीच, जात-पात, छुआछात, सती प्रथा जैसी कुप्रथा व पैसे के आधार पर ईसाई-मिशनरियों द्वारा, मुस्लिम संगठनों द्वारा गरीब जनता का धम परिवर्तन इस प्रकार हिन्दू धर्म को समाप्त करने के लिये भारत में यत्न हो रहा है।

श्रोतागण ! शायद आप विश्वास नहीं करेंगे कि भारत देश की आजादी के पश्चात् भी सती प्रथा जैसी घटना हो सकती है, हरिजन भाइयों का मन्दिरों में प्रवेश निषेध हो सकता है। आप सब समाचारपत्रों के माध्यम से जान चुके होंगे कि इस प्रकार की घटना कैसे तथा क्यों हुई जिसने सारे हिन्दू धर्म को हिलाकर रख दिया तथा सोचने पर मजबूर कर दिया कि क्या यह धर्म है !

आज से एक वर्ष पूर्व भारत देश के राजस्थान प्रान्त में जयपुर से लगभग 50 मी० दूर दिवराला ग्राम में यह घटना हुई। 17 वर्ष की उस रूपकंवर को विधवा होने के कारण धर्माधिकारियों ने बलात् अग्नि में जला दिया तथा सती प्रथा जैसे इस कुकृत्य को वेद शास्त्रों द्वारा सिद्ध करने का दुःसाहस भी किया। परन्तु हिन्दू धर्म

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में जागृति होनें के कारण स्वामी अग्निवेश जी के नैंतृत्व में सनातन धर्म सभा दिल्ली प्रदेश के प्रधान श्री गोस्वामी गिरधारीलाल जी के साथ हजारों कार्यकर्ता व 100 आर्य संन्यासियों ने इस दूषित प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाई। 5 दिसम्बर को लाल किले के प्रसिद्ध मैदान से पद यात्रियों का एक जत्था इन बुराइयों के विरुद्ध जन-जागृति करता हुआ गांव व शहरों से होता हुआ दिवाराला की ओर बढ़ा। इस पदयात्रा की सफलता को देखकर नामधारी हिन्दू धर्म के ठेके-दारों ने इस पदयात्रा के विरुद्ध राजस्थान उच्च न्यायालय में एक याचिका दायर की। उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीश ने पदयात्रा को सार्थक बताते हुए याचिका को खारिज कर दिया तथा कहा कि यह पदयात्रा जागृति के लिये होनी चाहिए।

दिवराला की घटना को लोग अभी भूल भी नहीं पाये थे कि उन्हीं धर्माधिकारियों ने हमारे हरिजन भाइयों का मन्दिरों में प्रवेश निषेध कर दिया। परन्तु विश्व हिन्दू परिषद् सनातन धर्म सभा, आर्य समाज व अन्य संगठनों ने इसके विरुद्ध आवाज बुलन्द की जिसका यह पअिणाम हुआ कि उन्हें अपने लोगों द्वारा अपमानित होना पड़ा तथा जिन हरिजनों ने अनेक कष्ट सहन करके भी हिन्दू धर्म को नही छोड़ा, उन्हें अपनाना पड़ा।

हिन्दू धर्म को जहां इस प्रकार की बुराइयां कमजोर कर रही हैं वहां दूसरी अन्य भी समस्यायें हैं। ईसाई व मुसलमानों द्वारा गरीव जनता को पैसे के बल पर ईसाई व मुसलमान बनाया जाना हिन्दू धर्म के लिए वहुत बड़ा खतरा है।

भारत के दक्षिण प्रान्त में मीनाक्षीपुरम की वह घटना जिसमें पूरे गांव को पैसे के बल पर मुसलमान धर्म में दीक्षित कर दिया था परन्तु विश्व हिन्दू परिषद् व आर्यसमाज तथा अन्य हिन्दू संगठनों की जागृति के कारण पूरे गांव को पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित किया तथा आज तक भी वहां पर विश्व हिन्दू परिषद् शुद्धि का कार्य कर रही है जिससे हजारों मुसलमान व ईसाई पुनः हिन्दू धर्म में आगये हैं। हमें इस प्रकार के कार्यों में सहयोग देना चाहिये।

1986 में इटली के श्री पोप पाल जिस समय भारत को यात्रा पर आये तो वहां की ईसाई मिश्नरियों ने योजना बनाई कि कम से कम 2 लाख हिन्दुओं को ईसाई बनाकर श्री पोप पाल जी का स्वागत

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया जाये। लेकिन विश्व हिन्दू परिषद्, आर्यसमाज व अन्य संगठनों ने मिलकर उसका स्थान-स्थान पर विरोध किया व देश भर में अलग-अलग स्थायों पर ईसाइयों को शुद्ध करके पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित किया। अकेले उड़ीसा के कालाहांडी जिले में 20000 ईसाइयों को शुद्ध किया जिससे ईसाई मिशनरी वहां पर असफल होगई तथा पोप पाल जी का वहां पर जाना ही स्थगित हो गया।

आदरणीय उपस्थित भाइयो व बहिनो ! अगर हम अपने हिन्दू धर्म के प्रति इसी प्रकार जागृत रहकर मिलकर कार्य करते रहे तो कोई भी शक्ति हिन्दू धर्म को चाहे वह ईसाई या मुसलमान हो हानि नहीं पहुंचा सकती। विश्व हिन्दू परिषद् के इस सम्मेलन में हमें विचार करना होगा उन सभी समस्याओं पर, जिनके कारण से हिन्दू धर्म कमजोर हो रहा है. तथा यह विचार करना होगा कि विदेशों में हिन्दू धर्म को जो खतरा है उसका मुकाकला कैसे किया जा सकता है। किस प्रकार से हम हिन्दू धर्म पर आये हुए संकट को दूर कर सकते हैं जिससे हमारा यह हिन्दू धर्म, हमारी यह हिन्दू सभ्यता पुनः सारे संसार में पूजनीय व माननीय हो।

मैं आशा करता हूं कि हम अवश्य इन समस्याओं पर विचार करके कोई निश्चित कार्यक्रम बनाकर उसे कार्यान्वित करंगे।

वेदविद्यालय एक दृष्टि में

स्थान—दक्षिण दिल्ली के प्रसिद्ध भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान मेडिकल अस्पताल के पीछे आधुनीक भव्य भवनों से सुसज्जित 119 गौतम नगर में इण्डिया गेट से लगभग ५ किलोमीटर की दूरी पर वेद विद्यालय स्थित है।

स्थापना—श्रावण पूर्णिमा संवत् 1991 तदनुसार 24 अगस्त 1934 ईसवी, 110 दयानन्दाब्द

संस्थापक—आचार्य राजेन्द्रनाथ शास्त्री

प्रधान—चौधरी दिलीपसिंह

आचार्य एवं मुख्याधिष्ठाता—आचार्य हरिदेव

प्रवेश समय—15 मई से 30 जून तक।

प्रवेशवय—अष्टम कक्षा उत्तीर्ण (12 से 14 वर्ष)

श्रेणी—नवम से सोलहवीं तक

विषय—व्याकरण, धर्मशास्त्र, साहित्य, निरुक्त, छन्द,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलङ्कार, उपनिषद्, दर्शन, वेद, राजनीति, इतिहास, गणित, विज्ञान, अंग्रेजी आदि।

उपाधि अधिकारी, (मध्यमा) प्रवीण (शास्त्री) व्याकरण-निष्णात (आचार्य) व्याकरणपारङ्गत

शिक्षा -अष्टम श्रेणी उत्तीर्ण छात्र को एक वर्ष तक विशेष अध्ययन कराकर, व्याकरणशास्त्र में प्रवेश के योग्य बनाकर (मध्यमा) प्रवीण से (आचार्य) व्याकरणपारङ्गत 16वीं श्रेणी तक अध्ययन कराना। इस अध्ययनकाल में किसीप्रकार का शिक्षाशुल्क नहीं होगा।

अवकाश—शिक्षाकाल में कोई अवकाश नहीं होगा।

मान्यता—महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक से सम्बन्द्ध

उत्सव—शीत ऋतु नवम्बर दिसम्वर में।

सम्प्रत्यय (पता) श्रीमद्दयानन्द वेदविद्यालय

119 गौतम नगर, नई दिल्ली-49

दूरभाष—657234

कुल सचिव

चतरसिंह वर्मा

वेद विद्यालय का उद्देश्य -

1 महर्षि दयानन्द प्रतिपादित आर्ष शिक्षण शैली एवं प्राचीन आश्रम प्रणाली के द्वारा विद्यास्नातक, व्रतस्नातक तथा विद्याव्रत स्नातक बनाना।

2 गुण कर्मानुसार प्राचीन आदर्श, वर्णव्यवस्था को पुनः प्रचलित करना।

3 वदिक धर्म के आदर्श उपदेशक, सदाचारी, त्यागी, तपस्वी, समाज एवं राष्ट्रसेवी कर्मठ विद्वान् बनाना।

4 राष्ट्र में भारतीय संस्कृति का प्रचार प्रसार व संरक्षण करना।

5 प्राचीन ग्रन्थों और सत्साहित्य का प्रकाशन तथा उनका प्रचार करना आदि-आदि।

वेद विद्यालय की विशेताएं—

आज आर्यजनों के सततप्रयास से भारतवर्ष के एक कोने से दूसरे कोने तक ऋषिपाठविधि के अनुसार अनेकों गुरुकुल चल रहे हैं। जिनमें यह विद्यालय अपना प्रमुख स्थान रखता है।

भारत की राजधानी के दक्षिण छोर में स्थित जहां आधुनिक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढंग से नई-नई बस्तियां, भव्य अट्टालिकाओं के साथ विकसित हो रही हैं, और इसके साथ-साथ भौतिकवाद की चकाचौंध से दक्षिण दिल्ली का यह क्षेत्र अनवरत क्रम से आवृत रहता है। ऐसे स्थल पर यह विद्यालय अपनी कतिपय विशिष्टताओं के कारण आर्यजगत् की श्रद्धा का केन्द्र बना हुआ है। दक्षिण भारत के प्रसिद्ध आर्यनेता स्व० श्री शेषराव जी बाघमारे के कनिष्ठ भ्राता श्री बापूजी बाघमारे अपनी सम्मति सञ्चायिका में कुछ विचार इस प्रकार उद्धृत करते हैं।

"चित्र के साथ चरित्र, आकृति के साथ संस्कृति, का विकास इस विद्यालय में होरहा है।" इसी प्रकाम आर्यजगत् के प्रसिद्ध कर्म-काण्डी विद्वान् श्री स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती विद्यालय को देखकर अपने उद्गार इस प्रकार व्यक्त करते हैं—मैं इस गुरुकुल भूमि में प्रथमवार आया, ब्रह्मचारियों का रहन-सहन और गुरुजनों का अध्यवसाय बहुत अच्छा और सराहनीय है। गुरुकुल देखकर प्राचीन ऋषि आश्रमों की याद हो जाती है।" ...

संस्था दानियों के सहयोग की पूर्णतया पात्र हैं।

1 ब्रह्मचारियों के भोजनाच्छादन और रहन-सहन आदि में समानता का व्यवहार होता है।

2 गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में गुरु का स्थान सर्वोपरि है. क्योंकि "अग्निना अग्निः समिध्यते" के अनुसार आचार्य अपनी दिव्य भावनाओं की स्थापना अपने अन्तेवासियों (शिष्यों) के हृदय में करके उन्हें पशुत्व से हटा देवत्व में परिणत कर देता है। यह संसार का सबसे कठिन कार्य है, और इसीलिए हमारी संस्कृति में गुरु का गौरव अतुल्य है। विद्यालय का यह परमसौभाग्य है कि इसके साथ श्रद्धेय आचार्य हरिदेव जी जैसे आदर्श आचार्य का जीवन लगा हुआ है जिस प्रकार पूज्य आचार्य जी सर्वस्व त्यागकर निष्काम भाव से विद्यालय की सेवा कर रहे हैं, वही भावनायें आपके स्नातकों में प्रतिफलित हो रही है। आज इस विद्यालय में सब अध्यापक अवैतनिक रूप में ही विद्यादान कर रहे हैं और सभी विद्यालय के स्नातक हैं।

3 यहां छात्र नियमित रूप से एक घण्टा यथायोग्य श्रमदान करते हैं, जिसमें सफाई, गोसेवा तथा इसी प्रकार के सामाजिक कार्य भवन निर्माण आदि सम्मिलित हैं। इस श्रमदान द्वारा जहां छात्रों का स्वास्थ्य ठीक रहता है, वहां अपनी संस्था से हार्दिक स्नेह एवं आत्मीयता उत्पन्न होती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छात्रों के प्रवेश नियम–

1 नवीन छात्रों का प्रवेश 15 मई से 30 जून तक होता है।

2 प्रवेश के समय विद्यार्थी का अष्टम कक्षा उत्तीर्ण होना आवश्यक है। विद्यार्थी का वाग्दान (सगाई) रहित तथा अविवाहित होना भी आवश्यक है।

3—आजीवन ब्रह्मचारी रहकर वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार हेतु सम्पूर्ण जीवन लगाने का भावना वाले बड़ी आयु के जिज्ञासु छात्र को भी प्रविष्ट किया जा सकता है।

4– विद्यालय में किसी प्रकार का कोई शुल्क नहीं लिया जाता है। भोजन के निमित्त 100 रुपये मासिक के हिसाब से 1200 रुपये वष के आरम्भ में अगाऊ देने होते हैं, जिसमें ऋतु अनुकूल तीन बार घी, दूध रहित भोजन दिया जाता है, प्रवेश समय पहली बार 201 रु० प्रवेश शुल्क लिया जाता है। बालक के किसी कारण से वर्ष के मध्य में विद्यालय छोड़ने पर भोजन शुल्क व प्रवेश शुल्क लौटाया नहीं जाता है। अध्ययन शुल्क, विद्युत, केश कतन, छात्रावास, जल, पुस्तकालय व्यायाम आदि के साधनों पर व्यय छात्रों से न लेकर विद्यालय की ओर से किया जाता है। इस प्रकार विद्यार्थी पर कम से कम 250 रु० मासिक व्यय विद्यालय करता है।

5—घी दूध का प्रबन्ध बालक के अभिभावक को करना पड़ता है, और वस्त्र-पुस्तकादि का व्यय भी अभिभावक को वहन करना पड़ता है।

6 - जो छात्र प्रवेश नियम 3 के अनुसार वेद और वैदिक साहित्य के प्रचार के लिये जीवन उत्सर्ग करना चाहते हों किन्तु व्यय वहन करने में असमर्थ हों, उनसे योग्यता अनुसार कुछ निश्चित समय शारीरिक परिश्रम करवाकर उनका सब प्रबन्ध विद्यालय की ओर से कर दिया जाता है।

7—प्रवेश के समय ब्रह्मचारी के पास निम्नलिखित सामान होना आवश्यक है। ऋतु के अनुकूल वस्त्र, बिस्तर, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास, आसन और एक सन्दूक (पेटी)।

8—छात्रों के वेश में एकरूपता लाने के लिए उनका वेश नियत है। यहां सफेद कपड़े का ही प्रयोग होता है। वेश में लंगोट, मेखला,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटिवस्त्र, यज्ञोपवीत, चद्दर अथवा सादा कुरता सम्मिलित हैं। अभिभावक नियत वेश के अनुरूप ही अपने छात्रों के लिए वस्त्र भेजते हैं, अथवा उनकी इच्छानुसार गुरुकुल में ही बनवा दिये जाते हैं।

9—यहां ब्रह्मचारियों को सब ऋतुओं में नंगे पांव और नंगे सिर रखा जाता है। इससे जहां प्रकृति द्वारा शक्ति प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होता है वहां शीतोष्ण सहन करने की क्षमता भी बढ़ जाती है।

10—यहां भोजन सात्विक, सुपाच्य, पौष्टिक एवं षड्रसयुक्त तथा ऋतु अनुकूल दिया जाता है जिसमें इमली आदि खटाई तथा अति उष्ण मसाले व लाल मीच आदि वर्जित हैं।

11—अध्ययन काल में छात्रों को किसी प्रकार का भी अवकाश घर जाने के लिए नहीं मिलता। आवश्यकतानुसार ज्ञानवृद्धि के लिए अध्यापकों के संरक्षण में यात्रार्थ ले जाया जाता है।

12—प्रवेश के समय बालक की शारीरिक तथा बौद्धिक परीक्षा ली जाती है। उसमें उत्तीर्ण होने पर ही छात्र प्रवेश पाता है।

अभिभावकों के लिए निर्देश—

1. बालकों के अभिभावक वेद विद्यालय के प्रबन्धकों की अनुमति से ही छात्रों से मिल सकते हैं।

2. यदि अभिभावक छात्र के लिए गुरुकुलीय नियमानुकूल कोई भोज्य सामग्री देता है तो वह संरक्षक की आज्ञा से वह छात्रों में बांट दी जाती है।

3 माता, बहिन आदि यदि कोई छात्र से मिलना चाहे तो वे विद्यालय के वार्षिकोत्सव पर मिल सकती है।

छात्र का पृथक् किया जाना—

1. यदि कोई छात्र हीनबुद्धि, किसी व्यसन (चोरी आदि) संक्रामक रोग से युक्त होने के कारण विद्यालय के अयोग्य समझा जायेगा तो वह पृथक् किया जावेगा।

2. जो छात्र प्रवेश होने के अनन्तर एक वर्ष तक निर्बुद्धि समझा जायेगा अथवा जो वार्षिक परीक्षा में लगातार दो वर्ष तक अनुत्तीर्ण होगा वह भी पृथक् कर दिया जाएगा।

3. यदि कोई छात्र आचारहीनता का दोषी अथवा विद्यालय के नियमों को उल्लंघन करता मिलेगा तो उसके दोषानुकूल उसको शारी-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिक, मानसिक अथवा आर्थिक दण्ड दिया जायेगा या वह विद्यालय से पृथक् करने योग्य समझा जायेगा।

आश्रम व्यवस्था—

गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति में आश्रमवास का विशेष महत्त्व है। गुरुकुल का अभिप्राय ही ऐसी शिक्षा से हैं, जिसके सब छात्र छात्रावास में रहते हों, जिससे उनकी दिनरात देखरेख की जा सके। छात्र का वास्तविक चरित्र निर्माण आश्रम में ही सम्भव है। इस बात को ध्यान में रखकर इस विद्यालय में आश्रम जीवन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। छात्रों की एक दिनचर्या है, उसी के अनुसार जागरण, शौच, स्नान, संन्ध्या, हवन, अध्ययन, भोजन, विद्यालय, विश्राम, व्यायाम आदि कार्य किये जाते हैं। चलने, फिरने, उठने, बैठने, बातचीत करने आदि में अनुशासन और शिष्टाचार पर विशेष बल दिया जाता है।

दिनचर्या—

विद्यालय में वर्ष भर दिनचर्या इस प्रकार चलती है—

ग्रीष्मकालीन दिनचर्या (चैत्र से भाद्रपद तक)	शीतकालीन दिनचर्या (आश्विन से फाल्गुन तक)
4-00 प्रातः जागरण	4-00 प्रातः जागरण
4-00 से 5-15 प्रार्थना, शौच, दन्तधावन, व्यायाम	4-00 से 5-15 प्रार्थना, शौच, दन्तधावन, व्यायाम
5-15 से 5-45 स्नान	5-15 से 5-45 स्नान
5-45 से 6-30 सन्ध्या, हवन, वेदपाठ	5-45 से 7-00 पाठ स्मरण
6-30 से 7-00 प्रातराश	7-00 से 7-45 सन्ध्या, हवन, वेदपाठ
7-00 से 7-45 पाठ स्मरण	7-45 से 9-00 पाठ स्मरण
7-45 से 8-00 उपस्थिति प्रार्थना	9-00 से 9-45 भोजन विश्राम
8-00 से 12-00 विद्यालय	9-45 से 1-00 उपस्थिति
12-00 से 2-00 भोजन विश्राम स्वाध्याय	10-00 से 4-00 विद्यालय
2-00 से 4-00 विद्यालय	4-00 से 4-30 शौच
4-00 से 4-30 शौच	4-30 से 5-30 कार्य
4-30 से 5-30 कार्य	5-30 से 6-15 व्यायाम
5-30 से 6-15 व्यायाम	6-15 से 6-45 स्नान
	6-45 से 7-15 सन्ध्या, हवन,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6-15 से 6-45 स्नान
6-45 से 7-15 सन्ध्या, हवन, वेदपाठ
7-15 से 7-45 भोजन
7-45 से 8-00 भ्रमण
8-00 से 9-45 पाठ स्मरण
9-45 से 10-00 लघुशंका प्रार्थना
10-00 से 4-00 शयन

वेदपाठ
7-15 से 7-45 भोजन
7-45 से 8-00 भ्रमण
8-00 से 9-45 पाठ स्मरण
9-45 से 10-00 लघुशंका प्रार्थना
10-00 से 4-00 शयन

विद्यालय–

दयानन्द वेद विद्यालय में अखिल भारतीय स्तर पर गणित एवं महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक द्वारा मान्यता प्राप्त श्रीमद्-दयानन्द आर्ष विद्यापीठ के पाठ्यक्रमानुसार शिक्षा दी जाती है।

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक नीचे दिये गये विषयों की परीक्षा करने और करवाने की व्यवस्था करता है—

1. वेद
2. हिन्दी
3. गणित
4. कृषि
5. शुद्धता
6. व्यायाम
7. इतिहास
8. संस्कृत साहित्य
9. भूगोल
10. विज्ञान
11. रेखागणित
12. संस्कृत व्याकरण
13. सिद्धान्त
14. नागरिक शास्त्र
15. गणित ज्योतिष
16. बीजगणित
17. गृहविज्ञान (कन्याओं के लिए)
18. उपनिषद्
19. अंग्रेजी
20. दर्शनशास्त्र
21: स्मृति
22. अलङ्कार शास्त्र
23. राजनीति शास्त्र
24 अर्थ शास्त्र
25. ब्राह्मी खरोष्ट्री
26. छन्दःशास्त्र (संस्कृत)
27. छन्दःशास्त्र (हिन्दी)
28. निरुक्त
29. गृह्यसूत्र प्रातिशाख्य ब्राह्मण

दयानन्द वेद विद्यालय की परीक्षायें–

यहां निम्नलिखित परीक्षायें दिलवाई हैं—

परीक्षा का नाम — अवधि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकारी परीक्षा	1 वर्ष
प्रवीण (मध्यमा)	4 वर्ष
व्याकरण निष्णात (शास्त्री) परीक्षा	3 वर्ष
व्याकरण पारङ्गत (आचार्य) परीक्षा	2 वर्ष
वेदाचार्य परीक्षा	2 वर्ष
दर्शनाचार्य परीक्षा	2 वर्ष
संस्कृतसाहित्याचार्य परीक्षा	2 वर्ष
राजशास्त्राचार्य परीक्षा	2 वर्ष
विशिष्ट परीक्षा	यथासम्भव

मध्यमा–

अधिकारी परीक्षा श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय लेता है। मध्यमा से परीक्षाएं महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक लेता है।

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से जो परीक्षाएं दिलायी जाती हैं उनकी समकक्षता निम्न प्रकार से है—

1. अधिकारी	मिडल के समकक्ष
2. प्रवीण (मध्यमा)	हायर सेकेण्डरी के समकक्ष
3. व्याकरण निष्णात (शास्त्री)	बी० ए० के समकक्ष
4. व्याकरण पारङ्गत (व्याकरणाचार्य)	एम० ए० के समकक्ष

अनध्याय (अवकाश)–

प्रत्येक रविवार को अनध्याय होता है जिसमें छात्र अपने वस्त्रादि प्रक्षालन करते हैं।

सभा–

ब्रह्मचारियों की वाक्कला को बढ़ाने के लिए यहां आर्य विद्यार्थी सभा नाम से एक सभा का गठन किया गया है। आर्य विद्यार्थी सभा में सभी छोटे-बड़े ब्रह्मचारी अपने सुयोग्य गुरुजनों की देख-रेख में सभागार में आकर सम्मिलित होकर बैठते हैं। इस सभा की प्रधानता अध्यापक वृन्द में से किसी भी एक विद्वान् के द्वारा की जाती है। सभा संचालन के लिये मन्त्री का स्थान विद्यार्थियों में से कोई विद्यार्थी अथवा अध्यापकों में से कोई भी एक अध्यापक जो इस कार्य में रुचि रखता हो, उसको वर्ष भर के लिये चुन लिया जाता है। यह सभा प्रति रविवार दोपहर पश्चात् 2 बजे से 5 बजे तक सम्पन्न होती है। मास का प्रथम व द्वितीय सप्ताह आर्यभाषा (हिन्दी) में तथा तृतीय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्ताह में संस्कृत और अन्तिम सप्ताह अंग्रेजी-हिन्दी तथा संस्कृत में से यथेच्छ विषय लिया जाता है।

आर्यसमाज–

वेद विद्यालय में 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के आदेशानुसार एक आर्यसमाज की स्थापना भी की हुई है जिसमें विद्यालय के सभी अधिकारी तथा बड़ी आयु के ब्रह्मचारी ही भाग लेते हैं।

वेदप्रचार मण्डल–

बढ़ते हुए भौतिकवाद के अन्धानुकरण को देखते हुए वेद-विद्यालयीय सभी उपाध्यायों तथा प्रबुद्ध छात्रों ने विद्यालयीय वेदप्रचार मण्डल के माध्यम से अपने अध्ययन तथा अध्यापन काल में से कुछ समय निकालकर यज्ञ, उत्सव, संस्कार तथा विभिन्न आर्यसमाजों तथा पारिवारिक सत्संगों में जाकर राजधानी के एक कोने से दूसरे कोने तक वेद धर्म की दुन्दुभि बजाते हैं। पिछले दिनों विद्यालय के उत्कलीय छात्रों ने अपने पश्चिमी उड़ीसा के पिछड़े हुए अञ्चल में गुरुकुल आमसेना को केन्द्र बिन्दु मानकर ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया। जिसमें सैकड़ों होनहार नवयुवकों ने आर्यसमाज की दीक्षा ली तथा योगासनों का अभ्यास किया।

इसी प्रकार यहीं के छात्र तथा अध्यापकों ने अपने आचार्य प्रवर की देखरेख में हरियाणा, उत्तरप्रदेश, बिहार आदि विभिन्न प्रान्तों में आर्यसमाज के प्रचार व प्रसार में पूर्ण मनोयोग से योगदान करते हैं। इस वेदप्रचार मण्डल का संचालन वेद विद्यालय के कार्यालय से होता है। इसी प्रचार की शृंखला में इसी वेद विद्यालय के स्नातक ब्रह्मचारी रामपाल शास्त्री ने 15 जून 85 से 15 सितम्बर 85 में तीन मास तक तथा 1988 में चार मास तक हालैण्ड तथा आसपास के अञ्चलों में आर्यसमाज रोटरडेम को केन्द्र बनाकर योगासन, भारतीय व्यायाम तथा प्राणायाम विद्या का प्रचार किया। इस प्रकार इस वेद-प्रचार मण्डल का संचालन वेद विद्यालय के कार्यालय से होता है।

व्यायाम–

गुरुकुल में बौद्धिक विकास के साथ-साथ शारीरिक उन्नति के लिये व्यायाम पर विशेष बल दिया जाता है, जिसके लिये दिनचर्या में समय निश्चित है। कोई न कोई व्यायाम अथवा खेल प्रत्येक ब्रह्मचारी के लिये आवश्यक है। दण्ड, बैठक, योगासन, दौड़, कुश्ती, कबड्डी तथा लाठी, तलवार चलाना, मुद्गर उठाना, मोगरी घुमाना, भारोत्तोलन, मल्लखम्भ आदि विविध प्रकार के भारतीय व्यायामों के साधनों का सुप्रबन्ध गुरुकुल में है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतियोगिता–

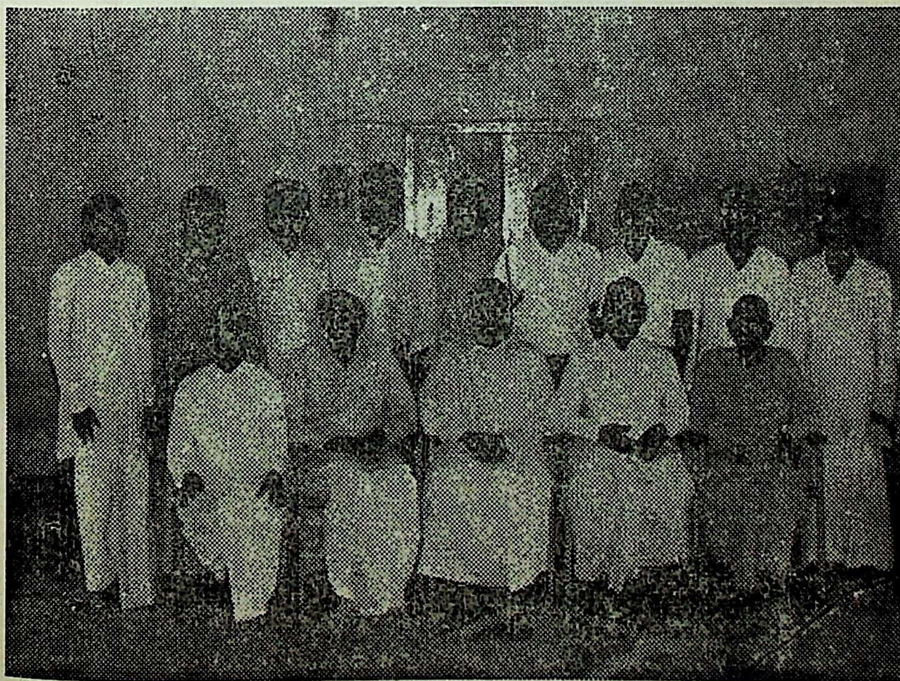
ब्रह्मचारियों की वाक् शक्ति बढ़ाने के लिये जहां सभा बना रखी है, वहां प्रतिवर्ष श्रावणी पर्व तथा विजय दशमी के शुभ अवसर पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। इसी प्रकार शारीरिक शक्ति प्रदर्शन के लिये प्रतिवर्ष इन्हीं अवसरों पर क्रीड़ा-प्रतियोगिता का भी आयोजन किया जाता है।

पारितोषिक–

कक्षा में प्रथम-द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र तथा उपर्युक्त दोनों प्रतियोगिताओं में उच्च स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को प्रतिवर्ष चतुर्वेद ब्रह्म परायण महायज्ञ के पुनीत अवसर पर यथायोग्य पारितोषिक दिये जाते हैं। इसी प्रकार जो ब्रह्मचारी दैनिक व्यवहार में सदा संस्कृत भाषा का प्रयोग करता है और जो ब्रह्मचारी पाणिनि-मुनि प्रणीत 'अष्टाध्यायी' (जिसमें 3978 सूत्र हैं), धातुपाठ, लिङ्गानुशासनम्, निघण्टु तथा एक वेद को कण्ठस्थ करके सुना देता है, उसको भी पारितोषिक दिया जाता है।

कुल सचिव

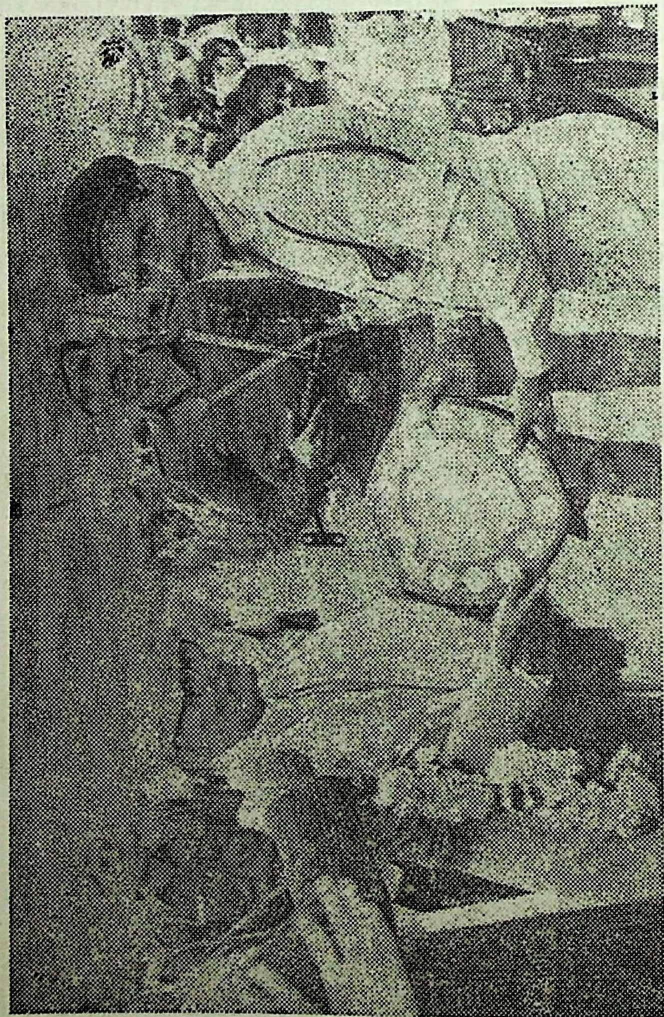
चरतसिंह वर्मा



अध्यापक मण्डल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



श्री स्वामी आनन्द बोध से पारितोषिक प्राप्त करते हुए श्री रामपाल शास्त्री योगाचार्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

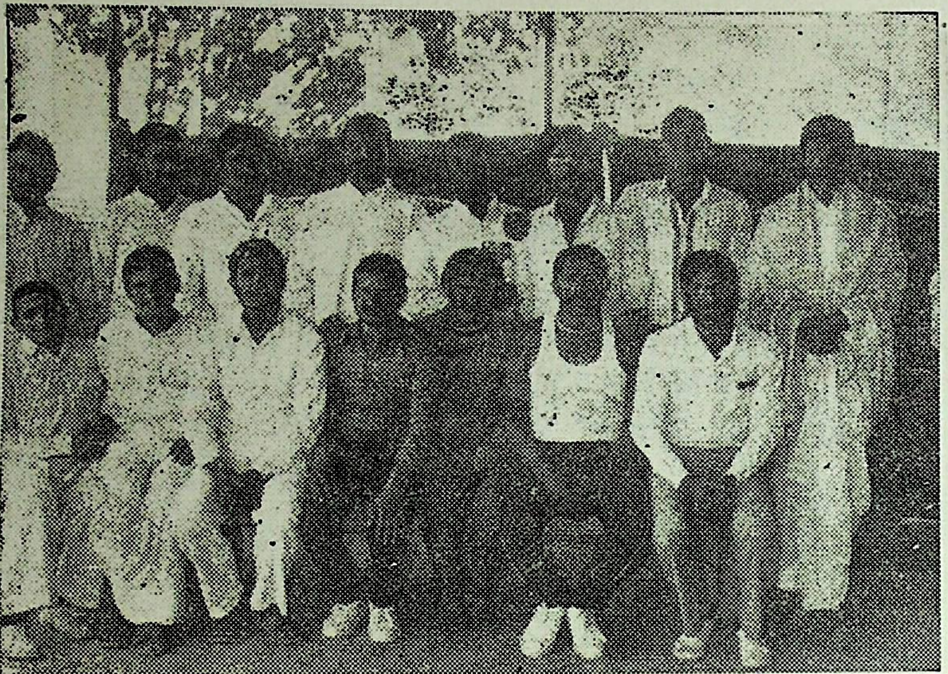
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



श्री आचार्य हरिदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए
श्री रामपाल शास्त्री योगाचार्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



श्री रामपाल शास्त्री योगाचार्य अपने सहयोगियों के साथ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

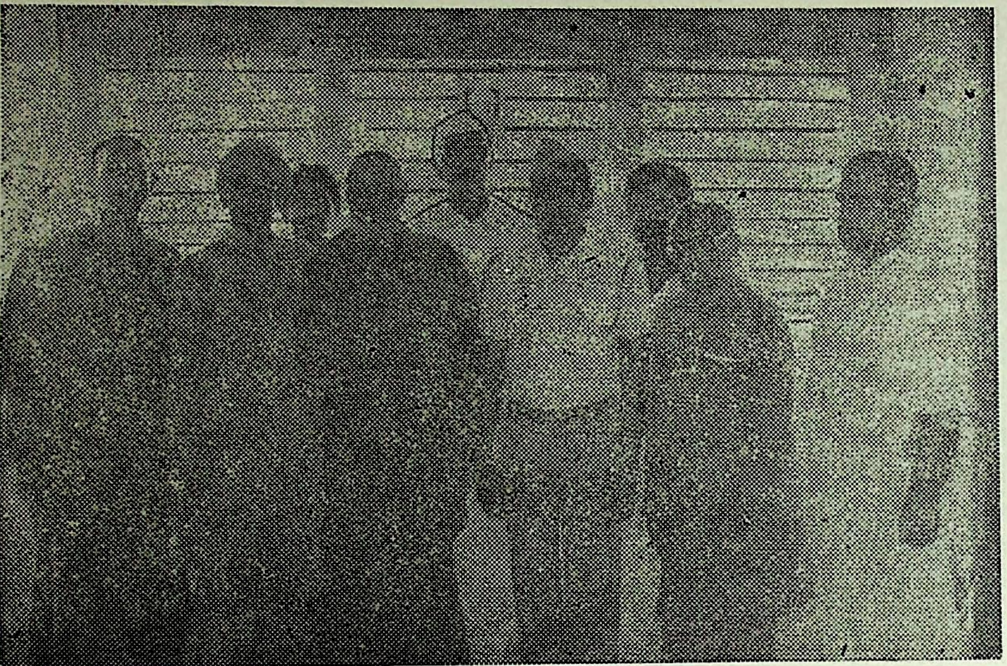
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गले से लोहे का सरिया मोड़ते हुए श्री रामपाल शास्त्री योगाचार्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

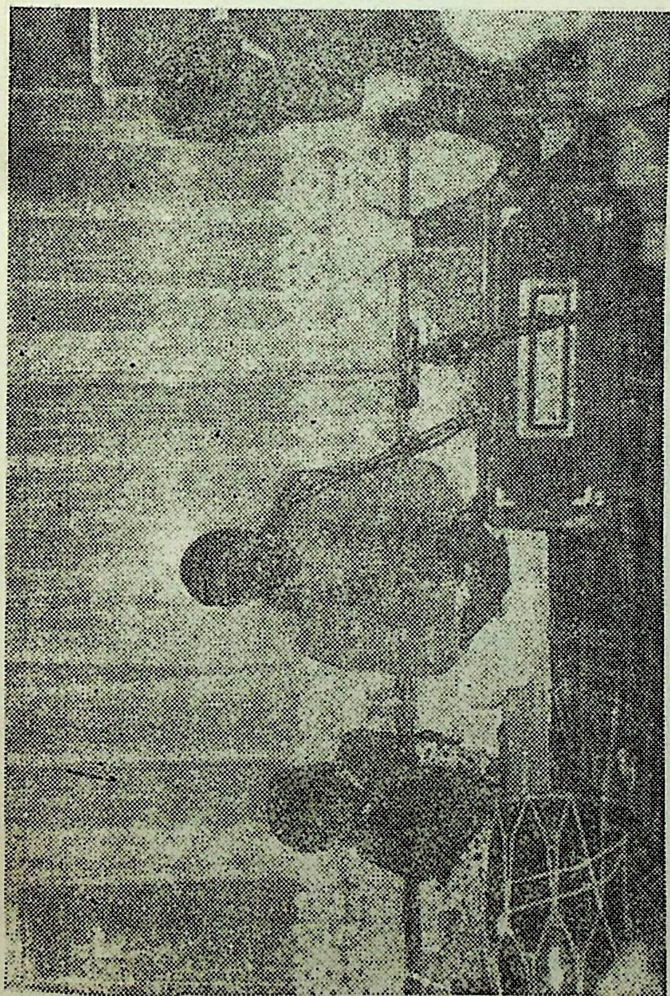
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आर्य वीर दल शिविर समापन समारोह पर सर्वश्री स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी आनन्दबोध जी, आचार्य हरिदेव आदि के साथ रामपाल शास्त्री योगाचार्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

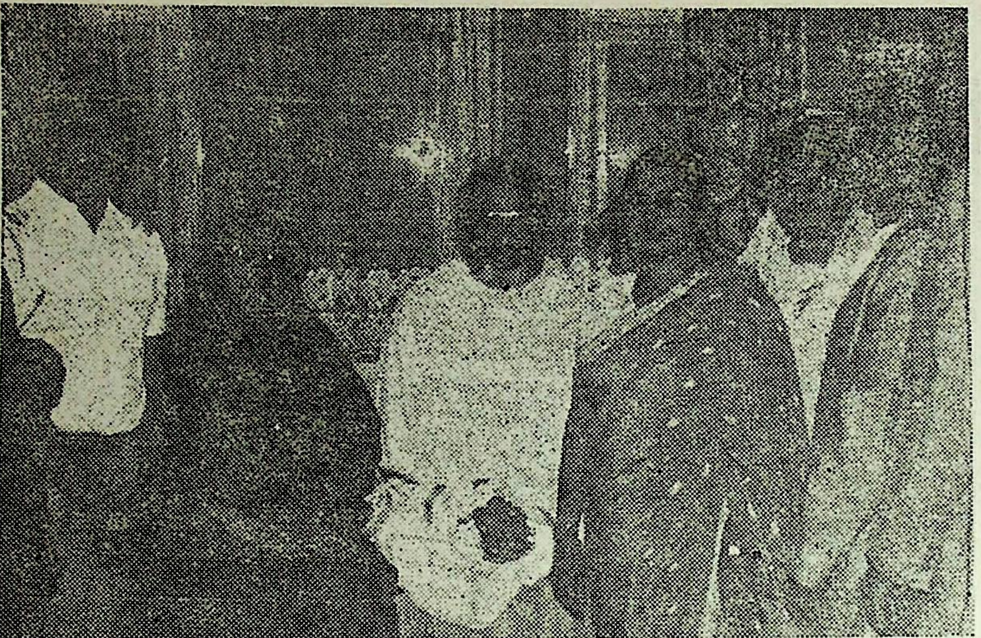
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रभाकर आर्यसमाज (हॉलैण्ड) में प्रवचन करते हुए श्री रामपाल शास्त्री योगाचार्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

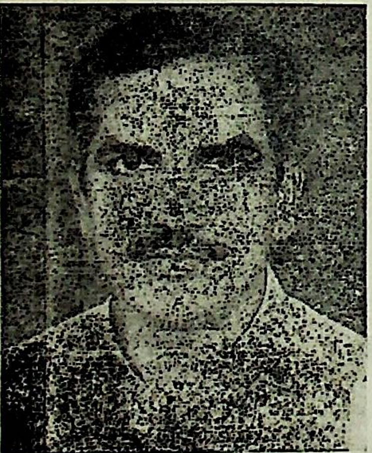


आर्यवीर दल प्रभाकर समाज के शिविर समापन समारोह में पं०उषर्वुध सुमंगला यति, पं० चन्द्रकलीसिंह और पं० चन्द्रदेई विशेश्वर के साथ रामपाल शास्त्री योगाचार्य

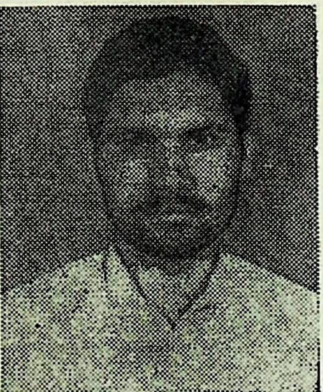
CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri





सभी शुभ कर्मों में मेरे परामर्शदाता
श्री विरजानन्द दैवकरणि गुरुकुल झज्जर



मेरे निकटतम सहयोगी
श्री हरवीर शास्त्री

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आर्यवीर दल प्रभाकर आर्यसमाज के सभापति
श्री राजगोपालाचार्य तुकुन एवं श्री राजेश के साथ
श्री रामपाल शास्त्री योगाचार्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आर्यसमाज दोरद्रखत में श्री रामपाल शास्त्री योगाचार्य का प्रवचन सुनते हुए जनसमूह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक के सहयोगी

दयानन्द वेदविद्यालय 118 गोतम नगर नई दिल्ली
प्रभाकर आर्यसमाज रोतरदाम (होलैण्ड)
आर्य सभा समाज रोतरदाम (होलैण्ड)
वैदिक ज्योति संगठन समाज रोतरदाम
आसन आर्यसमाज देनहाक
दयानन्द सभा होलैण्ड
आर्यसमाज दोरद्रखत
माता सुमंगला यति
श्री गंगाप्रसाद जी कलपू
श्री पं० हरिविश्वेश्वर जी
श्री पं० जीवन गणेश जी
श्री पं० आनन्द कुमार बिरजा
श्री विष्णु प्रसाद जयपाल
श्री पं० नारायण जी दोदा

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Grondbeginselen Der Arya Samaj

आर्यसमाज के दस नियम (होलेंस भाषा में)

1—God is de oorzsaak van alle ware kennis en van de zaken die hierdoor gekend worden.

2—Het opperwezen is waar, Intelligent, Heiling, Gelukkig, Almachtig, Rechtvaardig, Barmhartig, Zonder gelijke. Hij is de onderhouder van het heelal, de albeheerser, de Aldoordringer, Alwetend, Zonder vrees Hij is zonder Begin, Ongeboren, Oneindig, Onveranderlijk, Eeuwig, Onverouderbaar Onsterfelijk en Onlichamelijk.
Hij is de maker van het heelal.
Slechts hem komt aanbidding toe.

3—De veda's zijn de boeken der ware kennis. Het is de voornaamste plicht van alle ariers om ze te lezen, te onderwijzen, te haren en voor te dragen,

4—Ieder zal steeds bereid zijn de waarheid aan te nemen en onwaarheid te verwerpen.

5—Alle daden dienen deugdzaam te zijn D.W.Z. zij moeten gesteld worden na de overweging van hunne toelaatbaarheid of slechtheid.

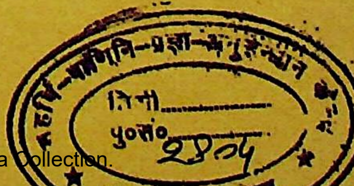
6—Het hoofddoel van De arya samaj is het welzijn der wareld D. I. de bevordering van aller lichamenlijke, Geestelijke en sociale belangen.

7—Ieder zal overeenkomstig zijn verdiensten met liefde en rechtvaardigheid behandelp worden.

8—Onkunde moet uitgeroeid en kennis verspreid worden.

9—Neimand zal tevreden zijn met eigen welzijn maar ieder beschouwt zijn eigen welzijn als ondergeschikt aan dat van allen.

10—Allen dienen zich te onderwerpen aan de wetten, die heilzaam zijn voor de ganse gemeenschap.
In persoonlijke aangelegenheden mag echter naar goedvinden gehandeld worden.



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रन्थ प्रकाशन में सहयोगी

इस पुस्तक को छपवाने के लिए श्री ईश्वरसिंह जी प्रधान (पालम गांव) ने अपने स्वर्गीय पिता श्री मीरसिंह जी सहरावत एवं ताऊ स्वर्गीय श्री शुभराम जी सहरावत की पुण्य स्मृति में 1000 (एक सहस्र) रुपये प्रदान किए। विद्यार्थी आर्य सभा की ओर से हम उनका धन्यवाद करते हैं।



पुस्तक के लेखक दम्पती



श्री रामपाल खत्री



श्रीमती उषा खत्री

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.